हिन्दी सौरभ

दसवीं कक्षा के लिए

(तीसरी भाषा - हिन्दी)

प्रकाशक

माध्यमिक शिक्षा परिषद, ओड़िशा

माध्यमिक शिक्षा परिषद, ओड़िशा द्वारा अनुमोदित और प्रकाशित
दसवीं कक्षा के लिए (तीसरी भाषा-हिन्दी)

© माध्यमिक शिक्षा परिषद, ओड़िशा

संपादक मंडल :

प्रो. स्मरप्रिया मिश्र (पुनरीक्षक)
डॉ. रवीन्द्र नाथ मिश्र (लेखक)
डॉ. बलराम मिश्र (लेखक)
डॉ. विष्णुचरण स्वाईं (लेखक)

संयोजक :

श्री राजकिशोर चौधुरी

प्रथम संस्करण : 2013

टंकण :
केशरी एन्टरप्राइजर्स
बिड़ानासी, कटक

मुद्रण :

मूल्य : ₹

भूमिका

नए राष्ट्रीय शिक्षा पाठ्यक्रम के अंतर्गत नई पुस्तकें तैयार की जा रही हैं । इसमें छात्र-छात्राओं की बौद्धिक, भावात्मक और सर्जनात्मक क्षमता का उपयोग करने पर ध्यान दिया गया है ।

हिन्दी इस देश की सामान्य जनता के इस्तेमाल में आती है । यह पुस्तक उन विद्यार्थियों के लिए लिखी गई है, जो तृतीय भाषा के रूप में हिंदी का अध्ययन करते हैं । इस पुस्तक की मदद से वे आसानी से बोलना, लिखना और पढ़ना सीख सकेंगे, ऐसा हमारा विश्वास है ।

हम पुस्तक को प्रस्तुत करनेवाले लेखक-संपादक-मंडल के प्रति आभार व्यक्त करते हैं । आशा करते हैं कि यह पुस्तक सबको पसंद आयेगी और उपयोगी भी होगी ।

सभापति
माध्यमिक शिक्षा परिषद
ओड़िशा, कटक

प्रस्तावना

राष्ट्रीय शिक्षण पाठ्यक्रम की रूपरेखा 2005 के मुताबिक नई पाठ्य-पुस्तकें लिखी जा रही हैं । इसमें भाषा-शिक्षण को नई दिशा देते हुए उसे अधिक उपयोगी बनाया गया है । हिन्दी देश की राष्ट्रभाषा तथा राजभाषा है । इसको सीखने के लिए खास कोशिश करनी है । इस पुस्तक में अनेक पाठ हैं जो मानवता, देशप्रेम, नैतिकता, कल्पना, उत्साह को बढ़ावा देते हैं । जीवन के साथ शिक्षा को जोड़ने का प्रयास है । वाचन, लेखन, पाठन की क्षमता बढ़ाने के लिए लंबी अनुशीलनियाँ दी गई हैं ।

शिक्षकों से विशेष अनुरोध है कि इस पुस्तक की मदद से विद्यार्थियों को सरल हिंदी सीखने और इस्तेमाल करने का अभ्यास कराएँ ।

हम आशा करते हैं कि यह पुस्तक उपयोगी सिद्ध होगी ।

लेखक संपादक मंडल

विषय - सूची

भाग - 1

क्र.सं.	विषय	कवि	पृष्ठ सं.
	पद्य विभाग		
1.	अनमोल वाणी :		1
	दोहे	कबीरदास	1
	पद	सूरदास	5
	दोहे	तुलसीदास	9
	दोहे	रहीम	12
2.	मनुष्यता	मैथिली शरण गुप्त	16
3.	एक तिनका	अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'	20
4.	चाँद का झिंगोला	रामधारी सिंह 'दिनकर'	24
5.	नीड़ का निर्माण फिर फिर	हरिवंशराय बच्चन	27
6.	काँटे कम-से-कम मत बोओ	रामेश्वर शुक्ल 'अंचल'	33

भाग-2

क्र.सं.	विषय	लेखक	पृष्ठ सं.
गद्य विभाग			
1.	मधुर भाषण	गुलाब राय	39
2.	बोध	प्रेमचंद	47
3.	देशप्रेमी संन्यासी	संकलित	67
4.	गिल्लू	महादेवी वर्मा	72
5.	जननी जन्मभूमि	संकलित	88

■ ■ ■

अनमोल वाणी

कबीर

कवि परिचय :

कबीरदास का जन्म सन् 1398 में काशी में हुआ था । कहा जाता है कि वे एक तालाब के किनारे मिले । एक जुलाहा दंपति ने उनका पालन पोषण किया । वे कपड़ा बुनने का काम करते थे । ज्यादा पढ़े-लिखे नहीं थे, लेकिन बड़े अनुभवी थे । बुद्धि, विवेक से काम लेते थे । बहुत बातें जानते थे । वे सभी धर्मों को बराबर मानते थे । वे ईश्वर के निर्गुण, निराकार रूप को मानते थे । उस समय धर्म और समाज में बड़ी गड़बड़ी थी । कबीर ने अपनी वाणी से उसे दूर करने का प्रयास किया । लोगों में जाति-पाँति, ऊँच-नीच का भेद भाव था । विभिन्न धर्मों के अनुयायी आपस में झगड़ते थे । बाह्य आडंबर, अंधविश्वास फैल गया था । कबीर जाति भेद, मूर्त्ति पूजा, बाहरी आडंबर आदि का विरोध करते थे । वे कहते थे कि सब मनुष्य बराबर हैं । वे बाहरी धार्मिक कर्म काण्ड की अपेक्षा भक्तिभाव पर बल देते थे । वे तीर्थ व्रत, जप-तप, मूर्त्ति-पूजा आदि बाहरी काम छोड़ सच्चे दिल से भगवान की भक्ति करने को कहते थे । वे सदाचार, सच्चाई, भाईचारे, धार्मिक सहिष्णुता का प्रचार करते थे । कबीर का व्यक्तित्व सादा-सीधा पर बड़ा प्रभावशाली था । उनकी वाणियों को उनके शिष्यों ने 'बीजक' नामक ग्रंथ में संगृहीत किया । उनकी भाषा मिश्रित खड़ीबोली है, जो उस समय जन समाज में प्रचलित थी । वे अपने गुरु रामानंद स्वामी का बड़ा आदर करते थे ।

दोहे

साँच बराबर तप नहीं, झूठ बराबर पाप ।
जाके हिरदै, साँच है, ताके हिरदै आप ।।
जो तोको काँटा बुबै ताहि बोय तू फूल ।
तोकु फूल को फूल है, बाको है तिरसूल ।।
धीरे-धीरे रे मना, धीरे-धीरे सब कुछ होय ।
माली सीचें सौ घड़ा, ऋतु आए फल होय ।।

शब्दार्थ :

साँच – सत्य । बराबर – समान । तप – तपस्या, ज्ञान । झूठ – मिथ्या । पाप – पातक, कुकर्म, अघ । जाके - जिसके । हिरदै – हृदय । ताके – उसके । आप – ईश्वर, भगवान । तोको – तुझको । काँटा – कंटक । बुबै – बोता है । ताहि – उसे । बोय – बो । तोक – तुझको । बाको – उस, उसको । तिरसूल – त्रिशूल, त्रिगुण । मना – मन । होय – होता । माली – पेड़ पौधे लगाने या सींचने वाला । सींचे – सींचन करना, पानी देना, सींचाई । सौ – 100 । घड़ा – मटका, कलश, गागर, जलपात्र । ऋतु – मौसम ।

दोहों को समझें :

1. सत्य हमेशा महान होता है । संसार में सत्य के समान तपस्या या ज्ञान नहीं । उसी प्रकार झूठ या मिथ्या के बराबर पाप या बुरा काम नहीं । कारण बुराकाम करना पाप है । जिसके हृदय में सत्य का निवास है अर्थात् जो हमेशा सच बोलता है, उसका हृदय निर्मल है । पाप रहित है । उसके निर्मल हृदय में भगवान विराजमान करते हैं । अर्थात् सत्यवादी को भगवान के दर्शन मिलते हैं । वे महान होते हैं, तत्त्व दर्शी होते हैं । समाज सत्यवादी का आदर करता है, पापी का अनादर करता है ।

2. यह सत्य है, प्रमाणित है कि अच्छे काम करने वालों को अच्छा फल मिलता है और बुरे काम करनेवाले को बुरा फल मिलता है । अर्थात् सभी को कर्म के अनुसार फल भुगतना पड़ता है । जैसी करनी वैसी भरनी । कबीर के कहने का अर्थ है कि जो तेरे रास्ते में काँटा बोता है अर्थात् जो तेरी बुराई करता है, तुम उसके रास्ते पर फूल बिछा दो अर्थात् तुम उसकी भलाई करो । इसका नतीजा यही होगा कि तुम्हारी अच्छाई से उन्हें अच्छा फल मिलेगा । उसकी बुराई के लिए उसको बुरा फल मिलेगा । मतलब हुआ कि अच्छा काम करो और अच्छा फल पाओ ।

3. कबीर दास का कहना है कि काम धीरे धीरे होता है । उसके लिए धैर्य की आवश्यकता है । इसके लिए उदाहरण देकर कबीर कहते हैं कि माली के सौ घड़ा पानी सींचने पर भी किसी भी पेड़ में समय के पहले जल्दी से फल नहीं लग जाते । इसलिए ऋतु की प्रतीक्षा करनी पड़ती है । वक्त के आने से ही पेड़ में फल लगते हैं ।

प्रश्न और अभ्यास

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दो-तीन वाक्यों में दीजिए :

(क) साँच या सत्य के बारे में कबीर ने क्या कहा है ?

(ख) बुराई करनेवालों की भलाई क्यों करनी चाहिए ?

(ग) धीरे-धीरे सबकुछ कैसे होता है – इसके लिए कवि ने कौन सा उदाहरण दिया है ?

2. निम्नलिखित पदोंके अर्थ दो-तीन वाक्यों में स्पष्ट कीजिए :

(क) जाके हिरदै साँच है, ताके हिरदै आप ।

(ख) जो तोको काँटा बुबै ताहि बोय तू फूल ।

(ग) माली सींचे सौ घड़ा, ऋतु आए फल होय ।

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-एक वाक्य में दीजिए :

(क) किसके बराबर तप नहीं है ?

(ख) झूठ के बराबर क्या नहीं है ?

(ग) जिसके ह्रदय में साँच है, उसके ह्रदय में कौन होते हैं ?

(घ) झूठ की तुलना किसके साथ की गई है ?

(ङ) साँच की तुलना किसके साथ की गई है ?

(च) जो तेरे रास्तेपर काँटा बोता है, तुझे उसके लिए क्या करना चाहिए ?

(छ) पेड़ में कब फल लगते हैं ?

(ज) कौन सौ घड़े पानी सींचता है ?

(झ) इन दोहों के रचयिता कौन हैं ?

(ञ) प्रथम दोहे में 'आप' शब्द का क्या अर्थ है ?

भाषा-ज्ञान

1. निम्नलिखित शब्दों के विपरीत या विलोम शब्द लिखिए :

साँच, पाप, बुरा, धीर, काँटा

2. निम्नलिखित शब्दों के समानार्थी शब्द कोष्ठक से चुन कर लिखिए :

बराबर, झूठ, पाप, हृदय, फूल, घड़ा, ऋतु

(मौसम, समान, कलुष, दिल, पुष्प, घट)

3. निम्नलिखित शब्दों के वचन बदलिए :

पाप, फूल, फल, माली, घड़ा, काँटा, ऋतु

4. इन शब्दों के खड़ी बोली - रूप लिखिए :

साँच, जाके, हिरदै, तोको, बुबै, बाको, होय

■ ■ ■

सूरदास

कवि परिचय :

भक्तिकाल के श्रेष्ठ कवि सूरदास हिन्दी के सूर्य जैसे तेजस्वी कवि हैं । उनका जन्म सन् 1478 में दिल्ली के निकट सीही गाँव में एक गरीब ब्राह्मण परिवार में हुआ । वे अंधे थे, पर मालूम पड़ता है कि वे जन्मांध नहीं थे । मथुरा और आगरा के बीच यमुना नदी के तटपर स्थित गऊघाट पर उन्होंने संगीत, काव्य और शास्त्र का अभ्यास किया और विनय के भाव से पदों की रचना की । आगे चलकर वे बल्लभाचार्य के शिष्य बन गये और ब्रज जाकर गोवर्धन के पास पारसोली नामक जगह पर अपना स्थायी निवास बनाकर पद लिखते रहे ।

सूरदास मानव-मन के बड़े पारखी थे । वात्सल्य भाव के तो वे मर्मज्ञ थे । श्रीमद् भागवत महापुराण के आधार पर रचित उनका विशाल ग्रंथ 'सूर सागर' हिंदी की अमूल्य निधि है । ये बच्चों के, माताओं के, साथियों के, नारी और पुरुषों के मनोभावों के पारंगम कवि थे ।

यह पद :

प्रस्तुत पाठ में महाकवि सूरदास द्वारा रचित कृष्ण की बाललीला के दो पदों को रखा गया है । ये पद 'सूर सागर' से संकलित हैं।

पद

1. **मैया मोहि दाऊ बहुत खिझायो ।
मोसों कहत मोल को लीन्हों, तू जसुमति कब जायो ।।
कहा कहौं एही रिस के मारे, खेलन हौं नहिं जात ।
पुनि-पुनि कहत कौन है माता, कौन है तुमरो तात ।।
गोरे नन्द, जसोदा गोरी, तू कत स्याम सरीर ।
चुटकी दै दै हँसत ग्वाल सब, सिखै देते बलवीर ।।
तू मोही को मारन सीखी, दाउहि कबहूँ न खीझै ।
मोहन मुख रिस की ये बातैं, जसुमति सुनि-सुनि रीझै ।।
सुनहू कान्ह बलभद्र चबाई, जनमत ही को धूत ।
सूर स्याम मोहि गोधन की सौं, हौं माता तू पूत ।।**

2. **हरि अपने आँगन कछु गावत ।**

तनक-तनक चरनन सौं नाचत, मनहिं-मनहिं रिझावत ।।

बाँह उचाइ काजरी-धौरी, गैयनि टेरि बुलावत ।

कबहुँक बाबा नंद पुकारत, कबहुँक घर मैं आवत ।।

माखन तनक आपने कर लै, तनक-बदन मैं नावत ।

कबहुँ चितै प्रतिबिम्ब खंभ मैं, लौनी लिए खबावत ।।

दुरि देखति जसुमति यह लीला, हरष आनंद बढ़ावत ।

सूर स्याम के बाल-चरित ये, नित देखत मन भावत ।।

शब्दार्थ :

मैया – माँ । मोहि – मुझे/मुझको । दाऊ – बड़ेभाई बलराम । खिझायो – चिढ़ाया । मोसों – मुझसे । मोल – खरीद कर । लीन्हों – लाया गया । जसुमति – यशोदा । जायो – जन्मा । रिस – क्रोध । पुनि-पुनि – बार-बार । तुमरो – तुम्हारा/तुम्हारे । तात – पिता । कत – क्यों, किसलिए । स्याम – काला । चुटकी – अंगूठे और पास की अंगुली से बजाना। ग्वाल – गोपाल । सिखै – सिखा देते । बलवीर – बलराम । मोही – मुझे ही । दाउहि – बड़े भाई से । रिझावत – प्रसन्न होते हैं । कबहूँ – कभी भी । खीझै – गुस्सा करना । चितै – देख कर । लौनी – मक्खन । खवावत – खिलाते हैं । दुरि – छिपकर । तनक-तनक – नन्हें-नन्हें । खीझै – गुस्सा करना । रिस – गुस्सा । लखि – देखकर । रीझै – प्रसन्न होना । चबाई – निंदक, चुगलखोर । जनमत – जन्मसे । धूत – शैतान, शरारती । गोधन – गाय रुपी धन । सौं – सौगंध, शपथ, कसम । पूत – पुत्र, बेटा ।

पदों को समझें :

1. इस पद में कृष्णकी बाललीला का वर्णन है । बालक कृष्ण माँ यशोदा के पास शिकायत करते हैं कि माँ ! मुझे बलराम भैया चिढ़ाते हैं । वे मुझे कहते हैं कि तुझे खरीद कर लिया गया है । जसुमति ने तुझे जन्म नहीं दिया है । इसलिए मैं उनके साथ खेलने नहीं जाता । वे बार-बार मुझे पूछते हैं कि कौन तेरी माता और कौन तेरे पिता हैं ?

नंद गोरे हैं, यशोदा गोरी है, तू क्यों श्यामल/काला है । यह सुनकर मुझे चिढ़ाने के लिए ग्वाल बालक चुटकी बजाकर नाचते हैं । बलराम भैया उन्हें सिखा देते हैं । तूने सिर्फ मुझे मारना सीखा है । बलराम भैया पर खीझती नहीं । मोहन के मुख पर गुस्सा देख कर और उनकी गुस्सैली वाणी सुनकर यशोमति प्रसन्न हो जाती हैं । माँ कहती है कान्हा सुन, यह बलराम चुगलखोर है वह जन्म से शरारती है । मैं गोधन की कसम खाकर कहती हूँ कि मैं तेरी माता और तू मेरा पुत्र है ।

2. बालक कृष्ण घर के आंगन में अकेले खेल रहे हैं ? उनका यह खेल सबके मन को मोह लेता है । यह वर्णन बहुत ही हृदयग्राही है ।

भगवान कृष्ण अपने आप कुछ गा रहे हैं । वे गाते-गाते नन्हें चरणों से नाचते भी हैं और मन मगन भी हो रहे हैं । कभी वे हाथ उठाकर काली एवं सफेद गायों को बुलाते हैं, तो कभी नंद बाबा को पुकारते हैं । वे कभी घर के भीतर चले जाते हैं । घर में जाकर थोड़ा मक्खन हाथ में लेकर खाते हैं, और थोड़ा सा मुँह में लगा लेते हैं । कभी खंभे में अपना प्रतिबिंब देखकर उसे माखन खिलाते हैं । माता यशोदा दूर से ही खड़ी होकर यह लीला देख रही हैं और आनंदित हो रही हैं । सूरदास कह रहे हैं कि कन्हैया की यह बाललीला रोज-रोज देखने पर भी प्यारी लगती है । इससे मन तृप्त नहीं होता ।

प्रश्न और अभ्यास

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दो-तीन वाक्यों में दीजिए :

(क) कृष्ण यशोदा से क्या शिकायत करते हैं और क्यों ?

(ख) बलराम कृष्ण से क्या पूछते हैं ?

(ग) यशोदा किसकी कसम खाती हैं और क्या कहती हैं ?

(घ) चुटकी देकर ग्वाल-बालक क्यों नाचते हैं ?

2. **निम्नलिखित पदों के अर्थ दो-तीन वाक्यों में स्पष्ट कीजिए :**

(क) पुनि-पुनि कहत कौन है माता, कौन है तुमरो तात ।

(ख) सूर स्याम मोहि गोधन की सौं हौं माता तू पूत ।

(ग) तनक-तनक चरननि सौं, नाचत, मनहिं-मनहिं रिझावत ।

(घ) कबहुँक चितै प्रतिबिम्ब खंभ में, लोनी-लिए खबावत ।

3. **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-एक वाक्य में दीजिए :**

(क) बाललीला (पद) के रचयिता कौन हैं ?

(ख) कौन कहते हैं कि तुझे मोल कर लाया गया है ?

(ग) बलराम पुनः पुनः क्या कहते हैं ?

(घ) ग्वाले बालक किस तरह हँसते हैं ?

(ङ) माँ यशोदा ने किसे मारना सिखा है ?

(च) कौन दाऊ पर नहीं खीझती है ?

(छ) स्याम शरीर का अर्थ क्या है ?

(ज) 'जनमत ही को धूत' का अर्थ क्या है ?

(झ) माँ यशोदा किसकी सौगंध खाती हैं ?

(ञ) कृष्ण किसे माखन खिलाते हैं ?

(ट) यशोमति क्या देखकर हर्षित हो जाती हैं ?

भाषा-ज्ञान

1. **निम्नलिखित शब्दों के तत्सम रूप लिखिए :**

मोल, सौं, पूत, तनक, धूत, बाँह, मैया, खिझायो, गैयनि, कजरी

2. **निम्नलिखित शब्दों के समानार्थी शब्द लिखिए :**

नित, चरन, कर, बाँह, रिस, तात, जात, बदन,

स्याम, धूत, सौं, पूत, शरीर, खीझे, चबाई

■ ■ ■

तुलसीदास

कवि परिचय :

भक्त कवि तुलसी दास का जन्म सन् 1532 में उत्तर प्रदेश के राजापुर में हुआ था और देहांत सन् 1633 में । पितामाता के स्नेह से वंचित होकर बचपन में उनको बड़ा कष्ट उठाना पड़ा । सौभाग्य से गुरु नरहरिदास ने उनकी बड़ी मदद की । तुलसी रामभक्त थे और यौवन काल में ही साधु बन गये । रामानंद उनके गुरु थे । वे हिन्दी और संस्कृत के बड़े पंडित थे । उस समय मुगलों का शासन था । देश की सामाजिक और धार्मिक परिस्थियाँ अस्तव्यस्त थीं । तुलसी दास ने रामचरित मानस लिखकर लोगों के सामने निष्कपट जीवन और आचरण का उदाहरण रखा । आज भी यह देश का अत्यंत लोकप्रिय ग्रंथ है । जन साधारण उसे बड़े चाव से पढ़ते हैं । दु:खी, निराश तथा भक्त लोगों को रामचरितमानस पढ़कर सुख शान्ति मिलती है । विनयपत्रिका, कवितावली, दोहावली, गीतावली आदि उनके अनेक ग्रंथ हैं । वे अवधी और ब्रजभाषा दोनों में लिखते थे ।

दोहे

तुलसी मीठे वचन ते, सुख उपजत चहुँओर ।
वसीकरण यह मंत्र है, परिहरु वचन कठोर ।।
गोधन, गजधन, बाजिधन और रतनधन खान ।
जब आवे सन्तोष धन, सब धन धूरि समान ।।
रोष न रसना खोलिए, बरु खोलिओ तरवारि ।
सुनत मधुर परिनाम हित, बोलिअ वचन विचारि ।।

शब्दार्थ :

मीठे – मीठा, मधुर । वचन – बात, वाणी । ते – से, द्वारा । उपजत – उपजना, पैदा होना । चहुँओर – चारों ओर । वसीकरण – वशीकरण, वश में या अधीन में कर लेना । मंत्र – प्रभावी शब्द, सलाह, परामर्श, वेदों के गायत्री आदि वेदादि साधन वाक्य जिनसे यज्ञादि का विधान हो । परिहरु – परित्याग करना, त्यागना, छोड़ना । कठोर – कठिन, कड़ा, शक्त, दृढ़, अप्रिय । गोधन – गाय धन स्वरूप है । गज – हाथी । बाजि – घोड़ा, अश्व ।

खान – भंडार । आवे – आता है । सन्तोष धन – सन्तोष रूपक धन । धूरि – धूल, रेत । समान – बराबर । रोष – गुस्सा, क्रोध, रुखाई । रसना – जीभ, जिह्वा, जबान, रसना, खोलना – बोलना । बरु – बल्कि, वरन् । तरवारि – तलवार, खड्ग, कृपाण । परिनाम – परिणाम, नतीजा । हित – मंगल, भलाई । विचारि – विचार करके, सोच समझकर ।

दोहों को समझें :

1. मीठे वचन सबको प्रिय होते हैं । मीठी वाणी से हम सबको अपने वश में कर सकते हैं । मीठी वाणी से सब ओर शान्ति बनी रहती है । सबको सुख मिलता है । ठीक इसके विपरीत कडुए वचन सबको दु:ख पहुँचाते हैं । मीठे वचन तो वशीकरण मंत्र (सबको वश में करनेवाले) के समान है । इसलिए हमें कडुए वचन न बोलकर मीठी वाणी ही बोलनी चाहिए ।
2. आम तौर पर हमारी धारणा है कि जिसके पास पर्याप्त गाय-भैंस, हाथी या घोड़े हैं या धनरत्न, हीरा, मोती आदि हैं, वह सबसे बड़ा धनी है । लेकिन तुलसी दास के अनुसार ये सारे धन होते हुए भी अगर मन में सन्तोष नहीं है तो ये सब मूल्य हीन हैं । सन्तोष रूपी धन के सामने ये सब धूलि के बराबर तुच्छ हैं । क्योंकि इस प्रकार के धनसे सुख, शान्ति नहीं मिलती । मन चिंतित रहता है ।
3. जब क्रोध अधिक हो तो जीभ नहीं खोलनी चाहिए । क्रोध में मनुष्य कड़वी बातें बोल जाता है । अर्थात् किसी को कुछ नहीं कहना चाहिए । ये कड़वी बातें तलवार से भी अधिक घाव करती हैं । कड़वी बातों का प्रहार सीधे हृदय और मन पर होता है । तलवार शरीर पर घाव करती है, मगर कड़वी बातें दिल, मन को घायल करके अधिक कष्ट देती हैं ।

प्रश्न और अभ्यास

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दो - तीन वाक्यों में दीजिए :

(क) कठोर वचन का क्यों परिहार करना चहिए ?

(ख) मीठे वचन से क्या लाभ होता है ?

(ग) सन्तोष धन के सामने कौन-कौन से धन धूरि के बराबर माने जाते हैं ?

(घ) रोष या गुस्से के समय क्या नहीं खोलना चाहिए और क्यों ?

(ङ) मीठे वचन की तुलना वशीकरण मन्त्र से क्यों की गई है ?

(च) हमें सोच विचार कर क्यों बोलना चाहिए ?

2. निम्नलिखित अवतरणों का आशय दो-तीन वाक्यों में स्पष्ट कीजिए :

(क) तुलसी मीठे वचन ते सुख उपजत चहुँओर ।

(ख) जब आवे सन्तोषधन, सबधन धूरि समान ।

(ग) रोष न रसना खोलिए बरु खोलिओ तलवार ।

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-एक वाक्य में दीजिए :

(क) किससे चारों ओर सुख उपजता है ?

(ख) वशीकरण का मंत्र क्या है ?

(ग) हमें क्या परिहार करना या छोड़ना चाहिए ?

(घ) कवि ने सन्तोष की तुलना किस से की है ?

(ङ) कब रसना नहीं खोलनी चाहिए ?

(च) किस धन के सामने सारे धन तुच्छ माने जाते हैं ?

(छ) सन्तोष धन के सामने सब धन किसके समान होते हैं ?

(ज) विचार करके वचन कहने से क्या होता है ?

भाषा-ज्ञान

1. निम्नलिखित शब्दों के विपरीत शब्द लिखिए :

मीठा, सुख, कठोर, छोड़ना, समान, खोलना

2. निम्नलिखित शब्दों के समानार्थक शब्द लिखिए :

वचन, सुख, कठोर, उपजना, गो, गज, बाजि

3. निम्नलिखित शब्दों के प्रयोग से सार्थक वाक्य बनाइए :

वसीकरण, कठोर, गोधन, सन्तोष, तलवार

4. निम्नलिखित शब्दों के शुद्ध रूप लिखिए :

चहुँओर, वसीकरण, धूरि, तरवारि, परिनाम

5. निम्नलिखित शब्दों के साथ करण कारक 'से' चिह्न का प्रयोग करके वाक्य बनाइए :

वचन, मंत्र, धन, तलवार

■ ■ ■

रहीम

कवि परिचय :

रहीम का पूरानाम अब्दुर्रहीम खानखाना है । उनका जन्म सन् 1556 में हुआ था । वे अकबर के अभिभावक बैरम खाँ के पुत्र थे । शाही महल में उनका बचपन बीता । बाद में उन्हें गुजरात की सूबेदारी मिली ।

रहीम अरबी, फारसी, तुर्की, संस्कृत और हिन्दी के अच्छे जानकार थे । वे हिन्दू संस्कृति और भक्ति-भावना से प्रभावित थे । उन्होंने दरबार का शाही ठाट देखा । वे बड़े पद पर काम करते थे । लेकिन उनमें गर्व का नाम न था । आम जनता के जीवन को देखा था । रहीम एक सहृदय, स्वाभिमानी, वीर और दानी व्यक्ति थे । साधारण मानव के प्रति उनके मन में बड़ा प्रेम था । उनके दोहों में अनुभूति की गहराई मिलती है । भक्ति, नीति, वैराग्य, श्रृंगार जैसी बातें उनकी रचनाओं में पायी जाती हैं । रहीम - काव्य के कई संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं । इनमें रहीम रत्नावली, रहीम विलास प्रामाणिक हैं ।

दोहे

तरुवर फल नहीं खात है, सरवर पिय हिं न पान ।
कहि रहीम पर काज हित संपति संचहि सुजान ।।
रहिमन देखि बड़ेन को लघु न दीजिए डारि ।
जहाँ काम आवै सुई कहा करै तलवारि ।।
रहिमन पर उपकार के करत न यारी बीच ।
मांस दिये शिवि भूप ने , दिन्हीं हाड़ दधीचि ।।

शब्दार्थ :

तरुवर – पेड़, वृक्ष, तरु । खात – खाता । सरवर – तालाब, पुष्करिणी । पियहिं – पीता है । पान – पानी, जल । पर – पराया । हित – मंगल । संचहि – एकत्र करना, संचय करना, सपत्ति धन, वित्त जमा करना । सुजान – उत्तम लोग । लघु – छोटा । डारि – डारना, फेंकना, डालना, सुई – सूजी, सुई, सूची । तलवारि – तलवार, कृपाण, खड्ग । यारी – दोस्ती । भूप – राजा, नरेश, नृपति, भूपति ।

दोहों को समझें :

1. पेड़ अपना फल नहीं खाता । तालाब अपना पानी नहीं पीता । ये दोनों क्रमश: दूसरों के लिए फल और पानी की बचत करते हैं । कारण फल खाने से दूसरों की भूख मिटती है । उसे आनन्द मिलता है । पानी पीने से प्यास मिटती है । सन्तोष होता है । ज्ञानी लोग सूझबूझवाले हैं । इसलिए वे दूसरों की भलाई के लिए संपत्ति का संचय करते हैं । इससे परोपकार होता है । कारण परोपकार एक महान कार्य है ।

2. कवि रहीम का कहना है कि अगर बड़े लोग आपके मित्र हैं, तो छोटे लोगों को छोड़ मत दीजिए । कारण समाज में दोनों का अलग-अलग महत्व होता है । इसलिए उन्होंने एक उदाहरण देकर कहा है कि जहाँ छोटी सुई की जरूरत होती है, वहाँ आपके पास तलवार है तो क्या उससे काम होगा ? नहीं । इसलिए दोनों का आदर करना चाहिए ।

3. कवि रहीम कहते हैं कि केवल जहाँ दोस्ती या मित्रता हो वहाँ उपकार नहीं किया जाता । परोपकार तो किसीके भी साथ किया जा सकता है । हम कहीं भी किसी भी स्थान पर आवश्यकता पड़ने पर दूसरे का उपकार कर सकते हैं । जैसे – शिवि राजाने अपना मांस अपरिचित बाज को दिया । दधीचि ऋषि ने देवताओं की मदद के लिए हड्डियाँ दे दीं, उससे बज्र बनाया गया । देवताओं का शत्रु बृत्रासुर मारा गया । उससे दधीचि को किसी लाभ की आशा नहीं थी, केवल परोपकार की भावना थी ।

शिवि :

पुराने जमाने में शिवि नामक एक राजा थे । वे बड़े परोपकारी थे । एकबार बाज पक्षी से डरकर एक कबूतर उनकी शरण में आई । राजा ने उसे शरण दे दी । उसको खाने वाला भूखा बाज उसके पीछे-पीछे आकर अपने आहार के लिए राजा से कबूतर माँगा । उसके बदले राजा शिवि ने उसे अच्छे खाद्य देने को कहा । पर बाज राजी नहीं हुआ । उसने राजा से कबूतर के बराबर मांस माँगा । अन्त में राजा ने कबूतर की जान बचाने के लिए अपने शरीर से मांस काट कर भूखे बाज को दे दिया था । आखिरकार वे तराजू पर बैठ गए । अपना पूरा बलिदान कर दिया ।

दधीचि :

दधीचि एक परोपकारी ऋषि थे । वे सरस्वती नदी के किनारे रहते थे । वृत्रासुर नामक एक बड़ा पराक्रमी राक्षस था । उससे मनुष्य क्या देवतागण भी डरते थे । उसके आतंक से स्वर्ग में हाहाकार मच गया । उनसे रक्षा पाने के लिए देवगण भगवान विष्णु के पास पहुँचे । भगवान विष्णु ने सलाह दी कि ऋषि दधीचि की अस्थियों से बज्र बनाया जायेगा । उसी बज्र से ही वृत्रासुर मारा जायेगा । भगवान विष्णु से परामर्श लेकर देवगण ऋषि दधीचि के आश्रम पहुँचे । ऋषि दधीचि ने देवगण का यथोचित आदर सत्कार किया । उनके शुभागमन का कारण पूछा । उनसे सारी बातें सुनकर ऋषि दधीचि ध्यान मुद्रा में बैठ गये । उनकी आत्मा परमात्मा में बिलीन हो गयी । उनकी अस्थियों से बज्र बनाया गया । उस बज्र से वृत्रासुर मारा गया । परोपकारी ऋषि दधीचि ने देवताओं की भलाई के लिए अपनी हड्डियाँ दे दी थीं ।

प्रश्न और अभ्यास

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दो/तीन वाक्यों में दीजिए :

(क) तरुवर और सरवर क्या करते हैं ?

(ख) शिवि राजा ने क्यों मांस दान दिया ?

(ग) छोटों की अवहेलना नहीं करनी चाहिए – क्यों ?

(घ) ऋषि दधीचि ने किसलिए हाड़ या अस्ति दान दिया था ?

2. निम्नलिखित अवतरणों का आशय दो-तीन वाक्यों में स्पष्ट कीजिए :

(क) तरुवर फल नहिं खात है, सरवर पिय हिं न पान ।

(ख) जहाँ काम आवै सुई, कहा करै तरवारि ।

(ग) मांस दियो शिवि भूप ने, दीन्हों हाड़ दधीचि ।

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-एक वाक्य में दीजिए :

(क) तरुवर क्या नहीं खाता है ?

(ख) सरवर क्या नहीं पीता है ?

(ग) सुजान किसलिए संपत्ति का संचय करता है ?

(घ) बड़े लोगो को देखकर लघु का क्या नहीं करना चाहिए ?

(ङ) सुई की जगह अगर तलवार मिलजाए तो काम होगा या नहीं ?

(च) परोपकार करते समय क्या जरुरी नहीं है ?

(छ) शिवि भूप ने क्या दान दिया था ?

(ज) किसने अपनी हड्डियों का दान दिया था ?

भाषा-ज्ञान

1. नीचे लिखे शब्दों के खड़ीबोली-रूप लिखिए :

नहिं, सरवर, पिय, पान, तलवारि, काज

2. निम्नलिखित शब्दों के विपरीत शब्द लिखिए :

पर, हित, सुजान, बड़ा, लघु, उपकार

3. निम्नलिखित शब्दों के समानार्थक शब्द लिखिए :

सरवर, तरु, पान, संपत्ति, सुजान, लघु, तलवारि, भूप, यारी, हाड़

4. निम्नलिखित शब्दों के लिंग निर्णय कीजिए :

फल, संपत्ति, सुई, तलवार, मांस

5. 'को' परसर्ग का प्रयोग करके पाँच वाक्य बनाइए ।

जैसे – राम को किताब दो ।

■ ■ ■

मनुष्यता

मैथिलीशरण गुप्त

कवि परिचय :

मैथिली शरण गुप्त का जन्म चिरगाँव झाँसी में सन् 1886 में हुआ था । उनकी पढ़ाई घर पर ही हुई । उन्होंने हिन्दी के अलावा संस्कृत, बंगला, मराठी और अँग्रेजी में भी अच्छा ज्ञान प्राप्त किया । बचपन से ही वे कविता लिखने लगे थे । अपने जीवन काल में ही वे राष्ट्रकवि के नाम से प्रसिद्ध हुए ।

गुप्तजी का परिवार रामभक्त था । उन्होंने भारतीय जीवन के आदर्श, इतिहास और संस्कृति को अपने काव्य का आदर्श बनाया । स्नेह, प्रेम, दया, उदारता आदि मानवीय भावों को भी साहित्य के माध्यम से उजागर किया ।

यह कविता :

इस कविता में मनुष्य को महान बनने की प्रेरणा दी गई है । कवि कहते हैं जिसने इस धरा पर जन्म लिया है, एक न एक दिन अवश्य मरेगा । इसलिए हमें कभी मृत्यु से नहीं डरना चाहिए । हम ऐसे मरे कि मरने के बाद भी अमर हो जाएँ । यदि हम जीवन भर सत्कर्म नहीं करेंगे तो हमें अच्छी मृत्यु नहीं मिलेगी अर्थात् मरने के बाद कोई याद नहीं रखेगा । जो व्यक्ति दूसरों के काम आता है वह कभी मरता नहीं है । क्योंकि वह कभी भी अपने लिए नहीं जीता है । पशु जिस प्रकार अपने आप मरते रहते हैं उसी तरह की प्रवृत्ति मनुष्य में भी कई बार दिखाई देती है जो ठीक नहीं है । मनुष्य को तो मनुष्य की मदद करने में प्राण दे देना चाहिए ।

संपत्ति के लोभ में पड़कर हमें गर्व से नहीं इठलाना चाहिए । कुछ अपने मित्र और परिवार आदि लोगों को देखकर भी अपने को बलवान नहीं मानना चाहिए क्योंकि इस संसार में कोई भी अनाथ या गरीब नहीं होता । यहाँ कोई भी अनाथ नहीं हो सकता क्योंकि ईश्वर

जो तीनों लोकों के नाथ हैं, वे सदा सबके साथ रहते हैं । क्योंकि ईश्वर दीनबंधु हैं । गरीबों पर दया करने वाले भी हैं परम दयालु हैं । विशाल हाथ वाले हैं अर्थात् वे सबकी मदद करने के लिए सदा तत्पर रहते हैं । जो अधीर होकर अहंकारी बन जाते हैं वे तो सच में भाग्यहीन हैं । मनुष्य तो वही है जो मनुष्य की सेवा करे और उसके लिए मरे । मनुष्य के लिए प्रत्येक मनुष्य बंधु है, परम मित्र है । इसे हमे समझना होगा । यही हमारा विवेक है । एक ही भगवान हम सब के पिता हैं । वे पुरातन प्रसिद्ध पुरुष हैं । वे ईश्वर हैं । यह तो सत्य है कि हमें अपने कर्मों के अनुरुप फल भोगना होता है । इसलिए बाहरी तौर पर हम भले ही अलग अलग दिखाई देते हैं पर अंदर से एक हैं । हम में अन्तर की एकता है । वेद ऐसा ही कहते हैं । समाज में अनर्थ तब होता है जब मनुष्य दूसरे को अपना बंधु नहीं मानता है । मनुष्य को ही मनुष्य की पीड़ा को दूर करना होगा । इसलिए सही माईने में मनुष्य वह है जो मनुष्य के लिए मरता है ।

मनुष्यता

विचार लो कि मर्त्य हो न मृत्यु से डरो कभी,
मरो परंतु यों करो कि याद जो करें सभी ।
हुई न यों सुमृत्यु तो वृथा मरे, वृथा जिए,
मरानहीं वही कि जो जिया न आपके लिए ।
वही पशु प्रवृत्ति है कि आप आप ही चरे,
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे ।।

रहो न भूल के कभी मदांध तुच्छ वित्त सें,
सनाथ जान आपको करो न गर्व चित्त में ।
अनाथ कौन है यहाँ ? त्रिलोकनाथ साथ हैं,
दयालु दीनबंधु के बड़े विशाल हाथ हैं ।
अतीव भाग्यहीन हैं अधीर भाव जो करे,
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे ।।

‘मनुष्य मात्र बंधु है’ यही बड़ा विवेक है,

पुराण पुरुष स्वयं पिता प्रसिद्ध एक है ।

फलानुसार कर्म के अवश्य बाह्य भेद हैं ।

पंरतु अंतरैक्य में प्रमाणभूत वेद हैं ।

अनर्थ है कि बंधु ही न बंधु की व्यथा हरे;

वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे ।

शब्दार्थ :

मर्त्य – मरणशील, पशुप्रवृत्ति – पशु जैसा स्वभाव, मदांध – जो गर्व से अंधा हो । चित्त – मन, स्वयंभू – परमात्मा / स्वयं उत्पन्न होनेवाला, अंतरैक्य – आत्मा की एकता / अंत:करण की एकता, प्रमाणभूत – साक्षी

प्रश्न और अभ्यास

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दो-तीन वाक्यों में दीजिए :

(क) कविने कैसी मृत्यु को सुमृत्यु कहा है ?

(ख) यहाँ कोई अनाथ नहीं है ऐसा कविने क्यों कहा है ?

(ग) ‘मनुष्य मात्र बंधु है’ से आप क्या समझते हैं ? स्पष्ट कीजिए ।

2. निम्नलिखित पंक्तियों के भाव दो-तीन वाक्यों में स्पष्ट कीजिए :

(क) ‘मनुष्य मात्र बंधु है’ यही बड़ा विवेक है,

पुराण पुरुष स्वयंभू-पिता प्रसिद्ध एक है ।।

(ख) रहो न भूल के कभी मदांध तुच्छ वित्त में ।

सनाथ जान आपको करो न गर्व चित्त में ।।

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक शब्द / एक वाक्य में दीजिए :

(क) कवि किससे न डरने की बात कर रहे हैं ?

(ख) कवि कैसी मृत्यु को प्राप्त करने का परामर्श दे रहे हैं ?

(ग) कवि मनुष्य की किस पशुप्रवृत्ति की बात कर रहे हैं ?

(घ) मनुष्य क्या पाकर मदांध हो जाता है ?

(ङ) सनाथ होने का घमण्ड क्यों नहीं करना चाहिए ?

(च) भाग्यहीन कौन है ?

(छ) संसार में मनुष्य का बंधु कौन है ?

(ज) पुराण पुरुष हमारे क्या हैं ?

(झ) वेद किसका प्रमाण देते हैं ?

(ञ) कौन बंधु की व्यथा हरण कर सकता है ?

भाषा-ज्ञान

1. उपयुक्त विभक्ति-चिह्नों से शून्य स्थान भरिए :

(से, में, के, का, को, के लिए)

(क) फलानुसार कर्म ———— अवश्य वाह्य भेद हैं ।

(ख) वेद अंतरैक्य ———— प्रमाण हैं ।

(ग) वही मनुष्य है जो मनुष्य ———— मरे ।

2. निम्नलिखित शब्दों के लिंग बताइए :

प्रवृत्ति, अंतरिक्ष, मृत्यु, विचार, व्यथा, अनर्थ ।

3. निम्नलिखित शब्दों के प्रयोग से एक-एक वाक्य बनाइए :

विवेक, प्रवृत्ति, मर्त्य, बंधु, व्यथा ।

■ ■ ■

एक तिनका

अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'

कवि परिचय :

आयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' का जन्म उत्तर प्रदेश के अजमगढ़ जिले के निजामाबाद कस्वे में सन् 1865 में हुआ था । स्कूली शिक्षा समाप्त करके वे सरकारी नौकरी में लग गए । हिन्दी, संस्कृत और फारसी में उन्होंने अच्छा ज्ञान प्राप्त किया था । वे हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी में अध्यापक भी रहे ।

हरिऔध जी खड़ीबोली हिन्दी के प्रथम कवियों में हैं । उनकी भाषा सरल, मुहावरेदार और भावगर्भक होती है ।

हरिऔध की प्रमुख रचनाएँ हैं – प्रिय प्रवास, वैदेही वनवास, कर्मवीर, रसकलश, चोखे चौपदे, चुभते चौपदे, आदि ।

यह कविता :

यह एक छोटी सी कविता है पर है बड़े काम की । छोटी छोटी चीजें ही हमारे जीवन को एकदम बदल देती हैं । मनुष्य को अपने पर बड़ा गर्व होता है । कवि कहते हैं वे एक दिन घमण्ड में भरकर एकदम ऐंठे हुए से तन कर छत के मुँडेर पर खड़े थे । ऐसे में कहीं दूर से एक छोटा-सा तिनका आकर उनकी आँखों में गिरा ।

कवि झुंझलाकर परेशान हो उठे । आँख जल रही थी और लाल होकर दुखने भी लगी । लेखक की ऐसी हालत देखकर लोग कपड़े की मुँठ देकर उनकी आँख को सेकने लगे कि शायद थोड़ा आराम मिल जाए पर नहीं । दर्द किसी तरह कम नहीं हुआ । ऐसे में कवि को ऐंठ (घमण्ड) मानों चुपचाप भाग गई थी । वे तो किसी भी तरह उस पीड़ा से छुटकारा पाना चाहते थे ।

जब किसी तरह आँख से तिनका निकला तो मानो उनका विवेक उन्हें ताना मार रहा था । तू इतना अकड़ क्यों दिखाता है । एक छोटा-सा तिनका ही तेरे अहंकार को तोड़ने में काफी है ।

एक तिनका

मैं घमंडों में भरा ऐंठा हुआ,
एक दिन जब था मुंडेरे पर खड़ा ।
आ अचानक दूर से उड़ता हुआ,
एक तिनका आँख में मेरी पड़ा ।

मैं झिझक उठा, हुआ बेचैन-सा,
लाल होकर आँख भी दुखने लगी ।
मूँठ देने लोग कपड़े की लगे,
ऐंठ बेचारी दबे पाँवों भागी ।

जब किसी ढब से निकल तिनका गया,
तब 'समझ' ने यों मुझे ताने दिए ।
ऐंठता तू किसलिए इतना रहा,
एक तिनका है बहुत तेरे लिए ।

शब्दार्थ :

तिनका – सूखी घास । घमंड – गर्व, अहंकार । ऐंठ – जिद्द, अकड़ । मुंडेरे – दीवाल का सबसे ऊपरी भाग जो छत के ऊपर रहता है । अचानक – सहसा । झिझकना – हिचकिचाना । बेचैन – व्याकुल, बेकल । मूँठ – कपड़े का गुब्बारा जो आँख को सेंकता है । दबे पाँव – चुपचाप । ढब – तरीका, रीति, ढंग । ताना – चिढ़कर कहना ।

प्रश्न और अभ्यास

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दो / तीन वाक्यों में दीजिए :

(क) एक दिन कवि को क्या हो गया ?

(ख) आँख में तिनका पड़ने पर घमंड़ी की क्या दशा हुई ?

(ग) आँख में तिनका पड़ने पर लोग क्या करने लगे ?

(घ) किसी तरह आँख से तिनका निकल गया तो कवि को क्या अनुभव हुआ ?

(ङ) एक तिनका कविता का मूल भाव क्या है ?

2. अर्थ स्पष्ट कीजिए :

(क) घमंडो में भरा ऐंठा हुआ,
एक दिन जब था मुंडेरे पर खड़ा ।

(ख) मैं झिझक उठा, हुआ बेचैन -सा ।
लाल होकर आँख भी दुखने लगी ।

(ग) ऐंठता तू किस लिए इतना रहा,
एक तिनका है बहुत तेरे लिए ।

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-एक वाक्य में दीजिए :

(क) एक तिनका कविता के कवि का नाम क्या है ?

(ख) एक दिन कवि कहाँ खड़े थे ?

(ग) अचानक क्या हुआ ?

(घ) कौन दबें पाँप भागी ?

(ङ) घमंडी के घमण्ड को दूर करने के लिए क्या बहुत है ?

भाषा-ज्ञान

1. नीचे दी गई कविता की पंक्तियों को सामान्य वाक्य में बदलिए :

जैसे – *एक तिनका आँख में मेरी पड़ा – मेरी आँख में एक तिनका पड़ा ।*

मूँठ देने लोग कपड़े की लगे – लोग कपड़े की मूँठ देने लगे ।

(क) एक दिन जब था मुँडेरे पर खड़ा ....

(ख) लाल होकर आँख भी दुखने लगी ....

(ग) ऐंठ बेचारी दबे पाँवों भागी ....

(घ) जब किसी ढब से निकल तिनका गया ....

(ङ) एक तिनका है बहुत तेरे लिए ....

2. निम्नलिखित शब्दों के बिलोम / विपरीत शब्द लिखिए :

झिझक, बेचैन, दुःख, दुःखद, बहुत

3. 'किसी ढब से निकलना' का अर्थ है किसी ढंग से निकलना । 'ढब से' जैसे कई वाक्यांशों से आप परिचित होंगे, जैसे – 'धम से' वाक्यांश है, लेकिन ध्वनियों में समानता होने के बाद भी 'ढब से' और 'धम से' वाक्यांशों के प्रयोग में अंतर है । नीचे कुछ ध्वनि द्वारा क्रिया को सूचित करनेवाले वाक्यांश और कुछ अधूरे वाक्य दिये गये हैं । उचित वाक्यांश चुनकर वाक्यों के खाली स्थान भरिए –

(छपाक से, टपटप, सर्र से, फुरे से)

(क) मेंढक पानी में ———— कूद गया ।

(ख) नल बंद होने पर भी पानी की कुछ बूँदें ———— चू गईं ।

(ग) शोर होते ही चिड़िया ———— उड़ी ।

(घ) मोटर साइकिल ———— गई ।

4. पाठ के आधार पर सही परसर्गों से शून्य स्थानों को भरिए :

(क) घमंडों ———— भरा ऐंठा हुआ ।

(ख) एक तिनका आँख ———— मेरी पड़ा ।

(ग) आ अचानक दूर ———— उड़ता हुआ ।

(घ) जब किसी ढब ———— निकल तिनका गया ।

(ङ) तब 'समझ' ———— यों मुझे ताने दिए ।

■ ■ ■

चाँद का झिंगोला

रामधारी सिंह 'दिनकर'

कवि परिचय

रामधारी सिंह 'दिनकर' जी का जन्म 30 सितम्बर, सन् 1908 को सिमरिया घाट, मुंगेर (बिहार) में हुआ । छात्रावस्था में ही 'दिनकर' का ओजस्वी कवि-रूप सामने आ गया । 'दिनकर' राष्ट्रीय भावधारा के प्रमुख कवि रहे । उन्हें शौर्य और वीरता का कवि माना जाता है ।

'दिनकर' जी की बहुमुखी प्रतिभा का विस्तार गद्य और पद्य दोनों में हुआ है । उनके काव्य ग्रंथों में प्रमुख हैं – रेणुका, हूँकार, रसवंती, कुरुक्षेत्र, रश्मिरथी, उर्वशी, हारे को हरिनाम, बापू, दिल्ली इत्यादि । गद्य ग्रंथों में प्रमुख हैं – देश-विदेश, मेरी यात्राएँ, अर्द्ध-नारीश्वर, मिट्टी की ओर, रेती के फूल, संस्कृति के चार अध्याय इत्यादि ।

'दिनकर' जी राज्य सभा के सम्मातित सदस्य रहे । भारत सरकार ने उनको 'पद्मभूषण' की उपाधि से अलंकृत किया । उन्हें 'उर्वशी' महाकाव्य के लिए ज्ञानपीठ पुरस्कार दिया गया ।

यह कविता :

बच्चे दिन-ब-दिन बढ़ते हैं । इसलिए उनकी पोशाक बड़ी साइज की बना ली जाती है । लेकिन चाँद घटता-घटता अमावस के दिन दिखाई नहीं देता । वह चाहता है कि उसके लिए एक झिंगोला या कुर्ता सिलवा दिया जाय । माँ पूछती है, बेटा, किस नापका बनाया जाय ? जिसे तू रोज-रोज पहन सके ?

इसमें एक मजाक और व्यंग्य है । सदा अस्थिर के लिए कुछ नहीं किया जा सकता ।

चाँद का झिंगोला

हठ कर बैठा चाँद एक दिन, माता से वह बोला,
''सिलवा दो माँ, मुझे ऊन का, मोटा एक झिंगोला ।
सन-सन चलती हवा रात भर, जाड़े से मरता हूँ,
ठिठुर-ठिठुर कर किसी तरह, यात्रा पूरी करता हूँ ।
आसमान का सफर और यह, मौसम है जाड़े का''
न हो अगर तो ला दो कुरता ही कोई भाड़े का ।''
बच्चे की सुन बात कहा माता ने, ''अरे सलोने !
कुशल करे भगवान, लगें मत, तुझको जादू-टोने
जाड़े की तो बात ठीक है, पर मैं तो डरती हूँ,
एक नाप में कभी नहीं, तुझको देखा करती हूँ ।
कभी एक उँगल भर चौड़ा, कभी एक फुट मोटा,
बड़ा किसी दिन हो जाता है, और किसी दिन छोटा ।
घटना-बढ़ता रोज, किसी दिन, ऐसा भी करता है,
नहीं किसी की आँखों का, तू दिखलाई पड़ता है ।
अब तू ही यह बता, नाप तेरी किस रोज लिवाएँ,
सी दें एक झिंगोला जो, हर रोज बदन में आए ?''

शब्दार्थ :

झिंगोला – छोटे बच्चों का अंगरखा या कमीज । हठ – जिद्द । उन – भेड़-बकरी आदि के रोयें । आसमान – आकाश, गगन, नभ । नाप – माप । सफर – यात्रा । मौसम – ऋतु । जाड़ा – शीत । भाड़ा – किराया । सलोने – सुन्दर, मनोहर ।

प्रश्न और अभ्यास

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दो-तीन वाक्यों में दीजिए :

(क) एक दिन चाँद क्या हठ करने लगा ?

(ख) बिना झिंगोले से चाँद को क्या कष्ट होता है ?

(ग) माँ जाड़े से नहीं, पर किससे डरती है ?

(घ) माँ चाँद के लिए झिंगोला क्यों नहीं बना पाती ?

2. अर्थ स्पष्ट कीजिए ।

(क) हठ कर बैठा चाँद एक दिन माता से वह बोला,
सिलवा दो माँ, मुझे ऊन का मोटा एक झिंगोला ।

(ख) बच्चे की सुन बात कहा, माता ने, ''अरे सलोने !
कुशल करे भगवान, लगें मत, तुझको जादू-टोने ।

(ग) कभी एक उँगल भर चौड़ा, कभी एक फुट मोटा,
बड़ा किसी दिन हो जाता है, और किसी दिन छोटा ।

(घ) अब तू ही यह बता, नाप तेरी फिस रोज लिवाए,
सी दें एक झिंगोला जो, हर रोज बदन में आए?''

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-एक वाक्य में दीजिए :

(क) एक दिन चाँद ने माँ से क्या कहा ?

(ख) रात भर किस तरह की हवा चलती है ।

(ग) जाड़े में वह किस तरह मरता है ?

(घ) चाँद किस तरह यात्रा पूरी करता है ?

(ङ) यदि झिंगोला न मिले तो फिर चाँद क्या लेना चाहता है ?

(च) चाँद कभी कभी माँ को कितना चौड़ा दिखाई देता है ?

(छ) चाँद कितना गोरा दिखाई देता है ?

(ज) ऐसा कौन सा दिन होता है जब चाँद बिलकुल नहीं दिखाई देता ?

(झ) चाँद का झिंगोले के लिए नाप लेना क्यों संभव नहीं है ?

भाषा-ज्ञान

1. निम्नलिखित शब्दों के विपरीत / विलोम शब्द लिखिए ।

कुशल, जाड़ा, ठीक, मोटा, घटता

2. निम्नलिखित शब्दों के वचन बदलिए ।

हवा, वह, माता, बच्चा, भाड़ा, बड़ा, बात, दिन, यह ।

■ ■ ■

नीड़ का निर्माण

हरिवंशराय बच्चन

कवि परिचय :

बच्चन का जन्म सन् 1907 में इलाहबाद में हुआ था । उनकी अंग्रेजी की उच्चशिक्षा इलाहावाद तथा कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय (इंलैण्ड) में हुई । वे कुछ दिन अध्यापक हुए, आकाशवाणी में काम किया फिर विदेश विभाग में हिन्दी सलाहकार रहे । बचपन से ही बच्चन जी की रुचि कविता लिखने की थी । उनकी कविताओं में जीवन का, जीने के लिए किये जाने वाले नाना कार्यों का वर्णन हुआ है । इन्होंने जीवन को अत्यंत महत्व दिया । इस कविता में भी जीवन को हरपल जीने की प्रेरणा दी गई है ? विपत्तियों में निडर होकर लड़ते रहने को उत्साहित किया गया है ?

इनकी अनेक रचनाएँ हैं जिन में से 'दो चट्टानों के लिए' उन्हें साहित्य अकादमी की ओर से पुरष्कृत किया गया था । सन् 1976 में उन्हें पद्मभूषण की उपाधि से भी सम्मानित किया गया ।

यह कविता :

देखा जाता है कि चिड़ियाँ अपने नीड़ या घोंसले को बार-बार बनाती हैं । ऐसे मनुष्य भी नये-नये घरों का निर्माण बराबर करते रहते हैं । रहने के लिए वे उनको बनाते हैं, क्योंकि उनमें अपने बच्चों और परिवार के दूसरे लोगों के प्रति स्नेह भाव होता है । प्राणी की यह जीने की इच्छा अदम्य है । इसलिए नीड़ या घर बार-बार टूटने पर भी पक्षी और नर-नारी उसे बनाते रहते हैं ।

छोटे लोगों का जीवन, छोटी चिड़िया का नीड़, आँधी तूफान में, अंधेरे में, धूल की आँधी में घिर जाता है । अर्थात् पृथ्वी पर बार-बार विपत्तियाँ आती हैं । कभी विपत्ति भयानक होती है तो दिन में रात सा अंधेरा हो जाता है । रात भी घन अंधकार में डूब जाती है । लगता है कि क्या सवेरा नही होगा ? सब के सब भीतत्रस्त हो जाते हैं । इतने में पूर्व दिशा से हँसती हुई उषा-रानी आ जाती है । भयंकर दुःख से सुख की यह किरण नये जीवन के लिए प्रेरणा देती है । यह स्नेह और प्रेम का आह्वान है । जब बड़े तूफान से पृथ्वी काँप

उठती है, बड़े बड़ पेड़ उखड़ जाते हैं , उनकी डाल पर घोंसले कहाँ उड़कर टूट बिखर जाते हैं और तो और, बड़े बड़े मकान जो ईंट पत्थर से बने होते हैं, बड़े मजबूत होते हैं वे भी ढह जाते हैं । उस वक्त एक छोटी सी चिड़िया नये जीवन की आशा लेकर आसमान पर चढ़ जाती है । वह विपत्ति से डरती नहीं । चाहे जो हो, नीड़ का निर्माण फिर करेगी । कुछ मनुष्य भी ऐसे ही उत्साही होते हैं । आकाश के बड़े बड़े भयानक दाँतों – (वज्रपात, आँधी, तूफान, घने बादल आदि) से उषा मुस्कुराती है । जब बादल गरजते हैं तब चिड़ियाँ चहचहाती भी हैं । तेज हवा के भीतर चिड़िया चोंच में तिनका लेकर उड़ जाती है । वह उनचास पवन (बड़ी तेज हवा) की भी परवाह नहीं करती ।

नाश से दु:ख तो होता है । लेकिन उसको निर्माण या सृजन का सुख दबा देता है । नीचा दिखा देता है । प्रलय होता है । उसके चारोंओर सन्नाटा छा जाता है । लेकिन फिर से नयी सृष्टि के गीत भी बार बार गाये जाते हैं । प्राणी मरता नहीं, बार बार जीता है । इसी जीने को जीवन कहते हैं ।

नीड़ का निर्माण

नीड़ का निर्माण फिर-फिर
नेह का आह्वान फिर-फिर ।

वह उठी आँधी कि नभ में
छा गया सहसा अंधेरा,
धूलि-धूसर बादलों ने
भूमि को इस भाँति घेरा ।

रात सा दिन हो गया, फिर
रात आई और काली,
लग रहा था अब न होगा
इस निशा का फिर सबेरा,
रात के उत्पात-भय से
भीत जन-जन, भीत कण-कण,

किन्तु प्राची से उषा की
मोहिनी मुसकान फिर-फिर ।

नीड़ का निर्माण फिर-फिर,
नेह का आह्वान फिर-फिर ।

बह चले झोंके कि काँपे
भीम कायावान भूधर,
जड़ समेत उखड़-पुखड़ कर
गिर पड़े, टूटे विटप वर ।

हाय तिनकों से विनिर्मित
घोंसलों पर क्या न बीती !

डग मगाए जब कि कंकड़,
ईंट, पत्थर के महल-घर ।

बोल आशा के विहंगम,
किस जगह पर तू छिपा था,
जो गगन पर चढ़ उठाता
गर्व से निज वक्ष फिर-फिर !

नीड़ का निर्माण फिर-फिर,
नेह का आह्वान फिर-फिर !

क्रुद्ध नभ के बज्रदंतों
में उषा है मुस्कुराती,
घोर गर्जन-भय गगन के
कंठ से खग-पंक्ति गाती ।

एक चिड़िया चोंच में तिनका
लिए जो जा रही है,
वह सहज में ही पवन
उंचास को नीचा दिखाती !

नाश के दुख से कभी
दबता नहीं निर्माण का सुख
प्रलय की निस्तब्धता से
सृष्टि का नव गान फिर-फिर !
नीड़ का निर्माण फिर-फिर
नेह का आह्वान फिर-फिर ।

शब्दार्थ :

नीड़ – घोंसला, रहने या ठहरने की जगह । नेह – प्रेम, स्नेह । आह्वान – बुलावा । निशा – रात्रि । उत्पात – उपद्रव । भीत – डरा हुआ । प्राची – पूर्व दिशा । मोहिनी – मोह लेनेवाली, आकर्षक, मोहक । मुसकान – मृदुहास । भीम कायावान – बड़े शरीर वाले । भूधर – पहाड़ । विटप – पेड़, वृक्ष । वर – श्रेष्ठ । विनिर्मित – बनाहुआ । विहंगम – पक्षी, विहग । बज्र – भीषण, कठोर । क्रुद्ध – नाराज । उषा – प्रात: । खगपंक्ति – पक्षियों की कतार । पवन उनचास – अनेक प्रकार की हवाएँ (ऋक् वेद में वायु देवताओं की संख्या उनचास कही गई है । प्रलय – सृष्टि का नाश होना । निस्तब्धता – खामोशी, नीरवता ।

प्रश्न और अभ्यास

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दो-तीन वाक्यों में दीजिए :

(क) आँधी के कारण दिन कैसा दीखने लगा और क्यों ?

(ख) आँधी की रात कैसे लग रही थी ?

(ग) तूफान की उग्रता से कौन-कौन से विनाश होने लगे ?

(घ) आँधी को कौन और कैसे नीचा दिखाता है ?

(ङ) आँधी तूफान में भी कौन मुस्कुराता था ?

(च) नाश के दुख में किसका सुख नहीं दबता ?

(छ) प्रलय की निस्तब्धता में किसका नव गान सुनाई पड़ता था ?

(ज) गृहस्थी जोड़ने में आनेवाली किन विपत्तियों का उल्लेख कवि ने किया है ?

(झ) 'विपत्तियों के बाद सुख के दिन आते हैं' कवि ने इस भाव को किस प्रकार व्यक्त किया है ?

(ञ) नीड़ के निर्माण से कवि का क्या तात्पर्य है ?

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक शब्द या एक वाक्य में दीजिए :

(क) आँधी उठने से नभ में क्या छा गया ?

(ख) बादलों ने किस को घेरा ?

(ग) उषा की मुस्कान कैसी थी ?

(घ) बड़े विटप कैसे उखड़ कर गिरे ?

(ङ) तूफान में कैसा लग रहा था ?

(च) रात कैसी थी ?

(छ) जन जन कैसे थे ?

(ज) कहाँ से उषा आई ?

(झ) घोषले किससे विनिर्मित थे ?

(ञ) गर्जनमय गगन के कंठ से कौन गाती थी ?

(ट) चिड़िया चोंच में क्या लिए जा रही थी ?

भाषा-ज्ञान

1. निम्नलिखित के विपरीत्त शब्द लिखिए :

काला, अँधेरा, क्रुद्ध, नीचा, सुख, नाश, दबता, महल

2. निम्नलिखित शब्दों के पर्यायवाची शब्द लिखिए :

रात, बादल, चिड़िया, नीड़, सबेरा, निर्माण, गगन

3. निम्नलिखित शब्दों के अर्थ बताते हुए वाक्य में प्रयोग कीजिए :

निशा, वज्र, प्रलय, विहंगम, उत्पात, भूधर, प्राची

4. निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध करके लिखिए :

(क) निस्तब्धता छाया हुआ है ।

(ख) काला रात आई ।

(ग) चिड़िया चहचहा रहा है ।

(घ) उषा मुस्कुराता है ।

(ङ) सृष्टि की नव गान हो रही है ।

(च) कंठ में खगपति गाती है ।

(छ) नीड़ की निर्माण होती है ।

(ज) रात-सा दिन हो गई ।

5. निम्नलिखित वाक्यों के खाली स्थान की पूर्त्ति कोष्ठक में दिए गए शब्दों से कीजिए :

(उषा की, तिनका, दुःख, कंकड़, बादलों ने)

(क) धूलि धूसर ———— भूमि को इस भाँति घेरा ।

(ख) प्राची से ———— मोहिनी मुसकान फिर-फिर !

(ग) डगमगाए जब कि ————, ईंट पत्थर के महल-घर ।

(घ) नाश के ———— से कभी दबता नहीं निर्माण का सुख ।

(ङ) एक चिड़िया चोंच में ———— लिए जो जा रही है ।

अभ्यास कार्य

(क) इस कविता की आवृत्ति कीजिए और याद रखिए ।

(ख) ऐसी एक कविता लिखकर अपने मित्रों को सुनाइए ।

■ ■ ■

काँटे कम-से-कम मत बोओ

रामेश्वर शुक्ल ‘अंचल’

कवि परिचय :

कवि रामेश्वर शुक्ल ‘अंचल’ का जन्म सन् 1915 में उत्तर प्रदेश के फतेहपुर जिले उत्तरप्रदेश के किशनपुर गाँव में हुआ । उन्होंने उच्च शिक्षा प्राप्त करके सरकारी नौकरी की । बाद में वे हिन्दी के प्रोफेसर हो गये ।

‘अंचल’ जी के पास अनुभव था और कल्पना-शक्ति भी थी । इसलिए शुरू में उन्होंने सूक्ष्म मनोभावों पर लिखा । उनकी कविता में मानव और प्रकृति के सौन्दर्य, यौवन, स्नेह-प्रेम, दु:ख-दर्द के सुन्दर और भावात्मक चित्र मिलते हैं । लेकिन कुछ दिनों के बाद उन्होंने जीवन के वास्तव रूप को देखा । समाज में विषमता थी । अन्याय-अत्याचार, शोषण और असन्तोष था । तब उन्होंने इनके विरोध में आवाज उठाई; मानवता का पक्ष लिया, शोषितों की वकालत की । ‘अंचल’ जी छायावाद से प्रगतिवाद के दौर में आए । देश-प्रेम, राष्ट्रीयता, संस्कृति के गीत गाये । मनुष्य को सही तरह से जीना सिखाया ।

‘अंचल’ जी ने उपन्यास, कहानी और निबंध भी लिखे । उनकी प्रमुख रचनाओं में से ‘अपराजिता’, ‘मधूलिका’, ‘लाल चूनर’, ‘किरण वेला’, ‘वर्षान्त के बादल’, ‘विराम चिह्न’ आदि रचनाएँ लोक प्रिय हुईं ।

यह कविता :

प्रस्तुत कविता कवि की एक प्रगतिशील रचना है । कवि का आग्रह है कि आदमी स्वार्थी नहीं, परोपकारी बने । वह दु:ख नहीं, सुख दे । सुख न दे सके तो कम-से-कम किसी को कष्ट न पहुँचाये । इसलिए कवि कहता है कि यदि तुम किसी के रास्ते पर फूल नहीं बो सकते तो कम-से-कम काँटें तो मत बोओ । अपने मन को अपने सुख-दु:ख के चक्कर में डालकर छोटा न करो । दूसरों को स्नेह, प्रेम और ममता की शीतल छाया में रखो । ईर्ष्या की कटुता समाप्त करो । क्योंकि शान्ति-सौहार्द के सुखद स्पर्श से जीवन की ज्वालाएँ बुझ जाती हैं । अपने व्यक्तिगत दु:ख तथा क्रोध से परिवेश को दु:खी मत करो । शान्ति

फैलाओ । संकट के समय अगर मुस्करा न सको तो व्याकुल भी मत होओ । आशा के सपने देखो । पर जलो मत । शान्ति से उसे पाने की चेष्टा करो । जो व्यक्ति दु:ख में भी जी सका, वही सच्चा चेतन प्राणी है । क्योंकि जीवन सुख और दु:ख दोनों से बना है । कवि ने ठीक ही कहा है कि 'सुख की अभिमानी मदिरा में जो जाग सका, वह है चेतन' । जीवन को जागकर भोगो । सो कर उदासीन न हो जाओ । संकट से मुँह मोड़ना, संघर्ष न करना कायरता है । तुम दूसरों का हौंसला बढ़ाओ । धीरज बँधाओ । जैसे बादलों की गड़गड़ाहट के बीच पवन का जयघोष बन्द नहीं होता, वैसे संकट चाहे कितना गहरा हो; अपना विश्वास, धैर्य, साहस नहीं खोना चाहिए । नहीं तो आदमी जिन्दा लाश हो जाएगा ।

काँटे कम-से-कम मत बोओ

यदि फूल नहीं बो सकते तो
काँटे कम से कम मत बोओ !

(1)

है अगम चेतना की घाटी, कमजोर बड़ा मानव का मन;
ममता की शीतल छाया में होता कटुता का स्वयं शमन !
ज्वालाएँ जब धुल जाती हैं, खुल-खुल जाते हैं मुँदे नयन ।
होकर निर्मलता में प्रशान्त बहता प्राणों का क्षुब्ध पवन ।

संकट में यदि मुस्का न सको, भय से कातर हो मत रोओ !
यदि फूल नहीं बो सकते तो, काँटे कम से कम मत बोओ !

(2)

हर सपने पर विश्वास करो, लो लगा चाँदनी का चन्दन,
मत याद करो, मत सोचो—ज्वाला में कैसे बीता जीवन,
इस दुनिया की है रीति यही —सहता है तन, बहता है मन,
सुख की अभिमानी मदिरा में जो जाग सका, वह है चेतन !
इसमें तुम जाग नहीं सकते, तो सेज बिछाकर मत सोओ !
यदि फूल नहीं बो सकते तो, काँटे कम से कम मत बोओ !

(3)

पग-पग पर शोर मचाने से मन में संकल्प नहीं जमता,
अनसुना अचीह्ना करने से संकट का वेग नहीं कमता,
संशय के सूक्ष्म कुहासे में विश्वास नहीं क्षण भर रमता,
बादल के घेरों में भी तो जय घोष न मारुत का थमता ।
यदि बढ़ न सको विश्वासों पर साँसों के मुरदे मत ढोओ !
यदि फूल नहीं बो सकते तो, काँटे कम से कम मत बोओ !

शब्दार्थ :

अगम – अथाह, दुर्गम, जहाँ कोई न जा सके । चेतना – चैतन्य, ज्ञान, बुद्धि, ज्ञानात्मक मनोवृत्ति । घाटी – पर्वतों के बीच का संकरा मार्ग । कटुता – कड़वापन । शमन – दमन, शान्ति । ज्वालाएँ – अग्निशिखा, लपट । क्षुब्ध – व्याकुल, कुपित । कातर – अधीर, व्याकुल । मदिरा – शराब, नशा । कुहासा – कुहरा, कुहेलिका । मारुत – वायु, हवा । जयघोष – जयजयकार । साँसों के मुरदे – जिन्दा लाश ।

प्रश्न और अभ्यास

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दो-तीन वाक्यों में दीजिए :

(क) मानव का जीवन प्रशान्त कैसे हो सकता है ?

(ख) दुनिया की रीति कौन-सी है ?

(ग) मनुष्य को किसके बारे में सोचना नहीं चाहिए ?

(घ) साँसों के मुरदे न होने का आग्रह कवि ने क्यों किया है ?

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्यों में दीजिए :

(क) यदि फूल नहीं बो सकते तो क्या करना चाहिए ?

(ख) कौन-सी घाटी अगम होती है ?

(ग) किसको कमजोर कहा गया है ?

(घ) संकट में अगर मुस्करा न सको तो क्या करना चाहिए ?

(ङ) चेतन किसे कहा गया है ?

(च) तुम अगर जाग नहीं सकते तो क्या करना चाहिए ?

(छ) क्या करने से संकट का वेग कम नहीं होता ?

(ज) संशय के सूक्ष्म कुहासे में क्या नहीं होता ?

(झ) किसमें भी पवन का जयघोष नहीं थमता ?

(ञ) अगर विश्वासों पर न बढ़ सको तो कम-से-कम क्या नहीं ढोना चाहिए ?

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-एक शब्द में दीजिए :

(क) प्रस्तुत कविता का कवि कौन है ?

(ख) कम-से-कम क्या नहीं बोना चाहिए ?

(ग) चेतना की घाटी का स्वरूप कैसा है ?

(घ) मानव के मन को क्या माना गया है ?

(ङ) किसकी शीतल छाया में कटुता का शमन हो सकता है ?

(च) किसके धुल जाने से मुँदे नयन खुल जाते हैं ?

(छ) किस पर विश्वास करना चाहिए ?

(ज) सुख की कौन-सी मदिरा में जागने वाले को चेतन कहा गया है ?

(झ) संशय का कुहासा कैसा होता है ?

(ञ) किसके मुर्दे ढोने के लिए मना किया गया है ?

4. निम्नलिखित अवतरणों के अर्थ स्पष्ट कीजिए :

(क) यदि फूल नहीं बो सकते तो

काँटे कम-से-कम मत बोओ ।

(ख) ज्वालाएँ जब धुल जाती हैं

खुल-खुल जाते हैं मुँदे नयन ।

(ग) है अगम चेतना की घाटी ।

(घ) सुख की अभिमानी मदिरा में जो जाग सका,

वह है चेतन ।

(ङ) यदि बढ़ न सको विश्वासों पर

साँसों के मुरदे मत ढोओ ।

5. रिक्त स्थानों की पूर्त्ति कीजिए :

(क) है अगम ———— की घाटी,

कमजोर बड़ा मानव का ———— ।

(ख) होकर निर्मलता में ———— ।

बहता प्राणों का ———— पवन ।

(ग) हर ———— पर विश्वास करो,

लो लगा चाँदनी का ———— ।

(घ) ———— की अभिमानी मदिरा में

जो ———— सका, वह है चेतन ।

(ङ) संशय के सूक्ष्म ———— में

———— नहीं क्षण भर रमता ।

6. नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर दिये गये विकल्पों में से चुनकर लिखिए :

(क) किसके घेरों में मारुत का जयघोष नही थमता ?

(i) शत्रुओं के (ii) मनुष्यों के (iii) बादलों के (iv) बिजली के

(ख) किसमें बीते हुए जीवन को याद नहीं करना चाहिए ?

(i) ज्वालाओं में (ii) दु:ख में (iii) सुख में (iv) विपत्ति में

(ग) मानव के मन को कहा गया है —

(i) चंचल (ii) कमजोर (iii) चेतन (iv) सजग

(घ) सुख की अभिमानी मदिरा में जीनेवाले को कहा गया है –

(i) शराबी (ii) सुखी (iii) घमण्डी (iv) चेतन

(ङ) किसकी शीतल छाया में कटुता का शमन होता है ?

(i) ममता की (ii) पेड़ की (iii) प्रेम की (iv) घर की

भाषा-ज्ञान

1. प्रस्तुत पाठ में प्रयुक्त तुकवाले शब्द लिखिए :

उदाहरण : नयन – पवन । ममता – कटुता ।

(तुक = शब्दों के अंत के समान अंश, जैसे – 'न' और 'ता' ।'

2. प्रस्तुत कविता में बहुत सारे विशेषण शब्दों का प्रयोग हुआ है ।

जैसे – अगम, कमजोर, शीतल आदि ।

इस तरह दूसरे विशेषण-शब्दों को छाँटिए ।

3. प्रस्तुत पाठ में 'प्रशान्त' शब्द आया है ।

इस शब्द के पहले लगा हुआ अंश 'प्र' एक उपसर्ग है । यह अधिकता का सूचक है ।

जो शब्दांश किसी मूल शब्द के पहले लगकर उसके अर्थ या भाव को बदल देते हैं, उन्हें उपसर्ग कहते हैं ।

इस तरह के उपसर्ग-प्रयुक्त शब्दों की सूची तैयार कीजिए ।

■ ■ ■

मधुर भाषण

गुलाबराय

लेखक परिचय :

गुलाबराय का जन्म सन् 1888 में इटावा में हुआ । अपने माता-पिता की धार्मिक और दार्शनिक प्रवृत्ति का आप पर विशेष प्रभाव पड़ा । आपने दर्शन शास्त्र में एम.ए. की परीक्षा पास की । दर्शन शास्त्र पर आपने कई पुस्तकें लिखी हैं। बाद में आपकी रुचि साहित्य पर केन्द्रित हुई । आगरा में सेंट जान्स कॉलेज में आप अध्यापक नियुक्त हुए । आपने एल.एल.बी की परीक्षा भी पास की । आगरा में रहते समय आपने साहित्य का गंभीर अध्ययन किया । 'साहित्य संदेश' का आपने सफल संपादन भी किया ।

गुलाबराय दर्शन, इतिहास, राजनीति, साहित्य आदि अनेक विषयों पर अमूल्य ग्रंथ हिन्दी को दे सके हैं । उनकी साहित्य सेवाओं का उचित मूल्यांकन करते हुए आगरा विश्वविद्यालय ने उन्हें डी.लिट. की उपाधि से सम्मानित किया था ।

मन की बातें, कर्त्तव्य शास्त्र, पाश्चात्य दर्शन का इतिहास, बौद्धधर्म आदि उनकी दार्शनिक रचनाएँ हैं । नवरस, प्रसादजी की कला, सिद्धान्त और अध्ययन, हिन्दी नाट्य विमर्श आदि उनकी आलोचनात्मक रचनाएँ हैं । ढलुआक्लब, प्रबंध प्रभाकर, जीवन पथ मेरी असफलताएँ, फिर निराशा क्यों आदि संग्रहों में उनके निबंध संकलित हुए हैं । उनके निबंधों में विषय प्रतिपादन की स्पष्टता तथा पर्याप्त गहराई है ।

विचार-बोध :

मधुर भाषण, मतलब मीठी बातें । सचमें, मीठी बातों से, मधुर व्यवहार से, शिष्टाचार और विनय से दूसरे का दिल जीता जा सकता है । भाषा मनुष्य की बड़ी संपत्ति है । वह मीठी बात करके समाज में मित्र बनाता है, कड़वी बोली से दुश्मनी मोल लेता है । नाराजगी, अहंकार, घमण्ड कठोर भाषा से व्यक्त हो जाते हैं । मन, वचन, कर्म में निष्कपटता हो तो वाणी मीठी होती है । सरल हृदय का व्यवहार और कपट या दिखावे की तकल्लुफ पहले असर भले ही करे पर देर सबेर पहचाने जाते हैं । लेखक कहता है कि क्यों न मीठी वाणी बोले ? दूसरों को खुश करें, आप भी खुश रहें । हम भद्र बनें, सभ्य बनें, सरल बनें । यह मानवता के लक्षण हैं । दुनिया में सफलता और कामयाबी की कुंजी तो मीठी बात ही है ।

मधुर भाषण

भाषा पर मनुष्य का विशेष अधिकार है । भाषा के कारण ही मनुष्य इतनी उन्नति कर सका है । जानवर हजारों वर्ष से जहाँ-के-तहाँ बने हुए हैं । किंतु मनुष्य उत्तरोत्तर उन्नति करता चला आया है । अन्य जानवरों की अपेक्षा मनुष्य भौतिक बल में न्यून होता हुआ भी अपनी बुद्धि और भाषा के सहारे अधिक सबल हो गया है । उसने पंच महाभूतों को अपने वश में कर लिया है । यह सब भाषा द्वारा प्राप्त सहकारिता के बल पर ही हो सका है । भाषा द्वारा हमारे ज्ञान और अनुभव की रक्षा होती है ।

भाषा द्वारा मनुष्य की सामाजिकता कायम है, किंतु भाषा का दुरुपयोग ही उसे छिन्न-भिन्न भी कर देता है । एक मधुर शब्द दो रूठों को मिला देता है और एक ही कटु शब्द दो मित्रों के मन में वैमनस्य उत्पन्न कर देता है ।

अब प्रश्न यह होता है कि मधुर या मिष्ट भाषण किसे कहते हैं ? साधारणतया जो वस्तु मनोनुकूल होती है, जिससे चित्त द्रवित होता है, वही मधुर कहलाती है । माधुर्य भाषा का भी गुण है । चित्त को पिघलाने वाला जो आनंद होता है, उसे 'माधुर्य' कहते हैं ।

वचनों का माधुर्य हृदयद्वार के खोलने की कुँजी है । वचनों का आकर्षण न्यूटन के तत्वाकर्षण और चुंबक के आकर्षण से भी बढ़कर है । तभी तो तुलसीदास ने कहा है :-

कोयल काको देत है कागा कासो लेत ।
तुलसी मीठे बचन ते जग अपनो करि लेत ।।

एक ही बात को हम कर्णकटु शब्दों में कहते हैं और उसी को हम मधुर बना सकते हैं । वाणभट्ट जब मरने वाला था तो यह प्रश्न हुआ कि उसकी अधूरी कादंबरी को कौन पूरा करेगा ? उसने अपने दोनों लड़कों को बुलाया और उनसे पूछा कि सामने जो सूखा

वृक्ष खड़ा है उसको तुम किस प्रकार अपनी भाषा में व्यक्त करोगे ? बड़े लड़के ने कहा, ''शुष्कं काष्ठं तिष्ठत्यग्रे'' दूसरे ने कहा, ''नीरस तरुवर विलसति पुरत:''- बात एक ही थी; कहने में फर्क था । बाणभट्ट ने अपने छोटे लड़के को ही पुस्तक पूरी करने का भार सौंपा ।

यह तो रही साहित्य के शब्दसंयोजन की बात ! साधारण बोलचाल में भी बड़ा अंतर हो जाता है । भाव को प्रभावशाली भाषा में व्यक्त कर देना ही साहित्य है । जो मनुष्य किसी गलतफहमी को दूर कर रूठे हुए मित्र को मना लेता है वह सच्चा साहित्यिक है ।

वार्तालाप की शिष्टता मनुष्य को आदर का भाजन बनाती है और समाज से उसकी सफलता के लिए रास्ता साफ कर देती है । मनुष्य का समाज में जो प्रभाव पड़ता है, वह बहुत अंश में पोशाक और चालढाल पर निर्भर रहता है, किंतु विषभरे कनकघटों की संसार में कमी नहीं है । यह प्रभाव ऊपरी होता है और पोशाक का मान जब तक भाषण से पुष्ट नहीं होता है, तब तक स्थायी नहीं होता । मधुर भाषी के लिए करनी और कथनी का साम्य आवश्यक है, किंतु कर्म के लिए वचन पहली सीढ़ी है । मधुर वचन ही विश्वास उत्पन्न कर भय और आंतक का परिमार्जन कर देते हैं । कटु भाषी लोगों से लोग हृदय खोल कर बात करने में डरते हैं । सामाजिक व्यवहार के लिए विचारों का आदान-प्रदान आवश्यक है और भाषा की सार्थकता इसी में है कि वह दूसरों पर यथेष्ट प्रभाव डाल सके । जब बुरे वचन आदमी को रुष्ट कर सकते हैं तो मधुर वचन दूसरे को प्रसन्न भी कर सकते हैं । शब्दों का जादू बड़ा जबर्दस्त होता है ।

मधुर वचनों के साथ यह भी आवश्यक है कि उनके पीछे टकसाली भाव भी हों नहीं तो मुलम्मे के सिक्कों की भाँति वे बेकार रहेंगे । हृदय की मलिनता और मधुर वचनों का योग नहीं हो सकता है । वचन के अनुकूल जब कर्म भी होते हैं, तभी मनुष्य वंद्य बनता है ।

मन, वाणी और कर्म का सामंजस्य ही मनुष्य को श्रेष्ठता के पद पर पहुँचाता है । फिर भी वचनों का विशेष महत्व है, क्योंकि एक कटु वचन सारे किए-धरे पर पानी फेर

सकता है । यद्यपि यह ठीक है कि दुधारु गाय की दो लातें भी सहन की जाती हैं, फिर भी दूसरे के स्वाभिमान का हनन कर उसके साथ उपकार करना कोई महत्व नहीं रखता । वाणी की मधुरता के साथ विनयपूर्ण व्यवहार ही शिष्टाचार है । शिष्टाचार का अर्थ लोग दिखावा या तकल्लुफ करते हैं । लेकिन वास्तव में उसका अर्थ है- सज्जनोचित व्यवहार । मधुर भाषण के साथ इसका भी मूल्य है । उनके द्वारा मनुष्य की शिक्षा-दीक्षा और कुल की परंपरा और मर्यादा का परिचय मिलता है ।

किसी काम को कराने के लिए कृपया शब्द का प्रयोग शिष्टता का परिचायक होता है । काम हो जाने के पश्चात् धन्यवाद कहना भी जरुरी है । जो अपने से नीचे हैं उनसे कोई ऐसी बात न कही जाए कि जिससे यह प्रकट हो कि हम उनको नीचा समझते हैं । अपने से कम स्थिति के लोगों के स्वाभिमान की रक्षा करना सज्जन का पहला कर्तव्य है ।

जो काम करना है उसको प्रसन्नता से करना चाहिए और उसके संबंध में कोई ऐसे शब्द भी न कहने चाहिए जिनसे प्रकट हो कि यह काम नाखुशी से किया जा रहा है या उस काम के करने से दूसरे के साथ एहसान किया जा रहा है । या तो कोई चीज न दे और दे तो पूर्ण उदारता से और प्रसन्नता के साथ । कम-से-कम जहाँ क्रिया में उदारता हो वहाँ 'वचने दरिद्रता' न आने देनी चाहिए ।

यदि इनकार ही करना पड़े तो उसमें अधिकार और अभिमान की गंध न आनी चाहिए । इनकार मजबूरी के ही कारण होना चाहिए चाहे वह सैद्धांतिक मजबूरी हो या आर्थिक इनकार शिष्टता के साथ भी हो सकता है और अशिष्टता के साथ भी । प्राय: लोग अशिष्टता से यह कह देते हैं - जाओ ! अमुक वस्तु यहाँ कहाँ से आई, तुम्हारा कोई देना आता है ? घर वालों को तो जुड़ता ही नहीं तुम्हारे लिए कहाँ से लाएँ ? इनकार करने में जो बातें कही जाएँ उनमें परायेपन का भाव न आने देना चाहिए । इनकार करते समय खेद प्रकट करना शिष्टाचार की माँग है । कहना चाहिए कि 'मुझे बड़ा खेद है कि आपके लिए इनकार करना पड़ता है । आपने यहाँ आने का या माँगने का कष्ट किया और मैं इस विषय में आपकी सेवा न कर सका ।'

वार्तालाप में हमको व्यापारिक या जाब्ते की बातचीत और निजी बातचीत में थोड़ा अंतर करना होगा । व्यापारिक बातचीत भी अशिष्ट न होनी चाहिए, किंतु वह नपी-तुली हो सकती है । निजी संबंध की बातचीत में आत्मीयता का अभाव न रहना चाहिए और थोड़ा सा कष्ट उठाकर बात को पूरी तौर से समझा देना अपना कर्तव्य हो जाता है । कुछ लोग सबके साथ निजी संबंध का-सा ही वार्तालाप करते हैं, यह भी बुरा नहीं है; किंतु बात उतनी ही कही जाए जितनी निभाई जा सके ।

●

शब्दार्थ :

भौतिक बल – शारीरिक ताकत । न्यून – कम् । पंचमहाभूत – पृथिवी, जल, आकाश, वायु, अग्नि । सहकारिता – सबसे मिल कर काम करना । वैमनस्य – विरोधी भाव, नाराजगी । माधुर्य – मधुरता । मनोनुकूल – मनको अच्छा लगने वाला । न्युटन का गुरुत्वाकर्षण – पाश्चात्य वैज्ञानिक न्यूटन ने बताया है कि पृथ्वी की माध्याकर्षण शक्ति चुम्बक से भी बढ़कर है । कोयल ....करिलेत – तुलसी ने बताया है कि कोयल किसी को कुछ नहीं देता है और कौआ किसी से कुछ नहीं लेता है । लेकिन कोयल अपनी मधुर बोली से सबको खुश कर देती है । कौवे की कर्कश वाणी से सब नाखुश हो जाते हैं । कादम्बरी – बाणभट्ट द्वारा रचित प्रसिद्ध गद्यकाव्य है जो कि संस्कृत भाषा में लिखा गया है । शुष्कं काष्ठं तिष्ठत्यग्रे – आगे सुखी लकड़ी है । नीरस तरुवर विलासति पुरत: – आगे नीरस वृक्ष शोभा पा रहा है । गलत फहमी – भ्रम धारणा । चालढाल – आचार व्यवहार । जबर्दस्त – जोरदार । टकसाली भाव – सच्ची भावना । मुलम्में के सिक्कों – नकली मुद्रा । कटु – तिक्त । शिष्ट – भद्र । सैद्धान्तिक – किसी विद्वान से सम्बंधित । मजबूरी – बाध्यता । वार्त्तालाप – बातचीत । विषभरे कनकघट – बाहरसे आकर्षक मगर भीतर से हानिकारक, सफेद भेष में काले दिलवाला । वचने दरिद्रता – कथन में कमी । आत्मीयता – निजीपन ।

प्रश्न और अभ्यास

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दो-तीन वाक्यों में दीजिए :

(क) भाषा के द्वारा मनुष्य ने किस प्रकार की उन्नति की है ?

(ख) मधुर भाषण किसे कहते हैं ?

(ग) बाणभट्ट ने अपने छोटे लड़के को पुस्तक पूरी करने के लिए क्यों कहा ?

(घ) किन-किन गुणों के कारण मनुष्य आदरभाजन बनता है ?

(ङ) मधुर वचन और कटु वचन बोलनेवालों को क्या मिलता है ?

(च) किसी काम को करने के लिए सज्जन का पहला कर्त्तव्य क्या है ?

(छ) वार्त्तालाप में व्यापारीक बातचीत और निजी बातचीत में क्या अंतर है ?

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्यों में दीजिए :

(क) मनुष्य की सामाजिकता किसके द्वारा कायम रहती है ?

(ख) कैसा शब्द दो रुठों को मिला देता है और कैसा शब्द दो मित्रों के मन में वैमनष्य उत्पन्न कर देता है ?

(ग) वाणभट्ट की कौन-सी किताब अधूरी रह गयी थी ?

(घ) बार्तालाप की शिष्टता से हमें क्या लाभ मिलता है ?

(ङ) कथनी और करनी में साम्य क्यों आवश्यक है ?

(च) मनुष्य कब बंद्य बनता है ?

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक शब्द या एक वाक्य में दीजिए :

(क) भाषा द्वारा किसकी रक्षा होती है ?

(ख) 'मधुर भाषण' निबंध के लेखक कौन हैं ?

(ग) कौन मनुष्य को आदर भाजन बनाती है ?

(घ) मधुर भाषी के लिए किसमें साम्य रखने की आवश्यकता है ?

(ङ) किन-किन का सामंजस्य मनुष्यता को श्रेष्ठता के पद पर पहुँचाता है ?

(च) किन-किन का योग नहीं हो सकता ?

(छ) किसकी दो लातें भी सहन की जाती हैं ?

(ज) शिष्टता क्या है ?

(झ) किसकी रक्षा सज्जन का पहला कर्त्तव्य है ?

(ञ) निजी संबंध की बातचीत में किसका अभाव न रहना चाहिए ?

भाषा-ज्ञान

1. निम्नलिखित में से विशेषण शब्दों को चुनकर लिखिए :

विश्वास, भौतिक, पटु, माधुर्य, वचन, शिष्टता, प्रसन्नता, व्यापारिक, सैद्धान्तिक, मर्यादा, अभिमान ।

2. निम्नलिखित शब्दों के लिंग बताइए :

गंध, भाव, कर्त्तव्य, परंपरा, भाषा, भाषण, वचन, वाणी, साहित्य, उन्नति ।

3. निम्नलिखित के पर्यायवाची शब्द लिखिए :

मनुष्य, चित्र, पुस्तक, मधुर, कटु, आनंद

4. निम्नलिखित शब्दों के विलोम रूप लिखिए :

ज्ञान, उन्नति, सच्चा, मधुर, आनंद, मित्र, बड़ा

5. निम्नलिखित शब्दों के प्रयोग से एक-एक वाक्य बनाइए :

वचन, भाषण, चाल-ढाल, आदान-प्रदान, सामंजस्य, इनकार, आत्मीयता

6. निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध करके लिखिए :

(क) भाषा मनुष्य के विशेष अधिकार है ।

(ख) हृदय का मलीनता और मधुर वचनो में योग नहीं हो सकता ।

(ग) कटुभाषी लोगों में लोग हृदय खोलकर बात करने में डरते हैं ।

(घ) भाव को प्रभावशाली भाषा के व्यक्त कर देना ही साहित्य है ।

(ङ) मधुर वचन दूसरे में प्रसन्न भी कर सकते हैं ।

7. 'ता' प्रत्यय लगाकर शब्द बनाइए :

सामाजिक, मनुष्य, प्रसन्न, अशिष्ट, मलीन

8. 'इक' प्रत्यय लगाकर शब्द बनाइए :

विचार, नीति, इतिहास, भूत, समाज, साहित्य, सिद्धांत, व्यापार

निम्नलिखित वाक्यों को याद रखिए :

(क) वाणी और कर्म में सामंजस्य ही मनुष्य को श्रेष्ठता के पद पर पहुँचाता है ।

(ख) मधुरभाषी के लिए कथनी और करनी का साम्य आवश्यक है ।

(ग) चित्त को पिघलानेवाला जो आनंद होता है, उसे 'माधुर्य' कहते हैं ।

(घ) वार्त्तालाप की शिष्ठता मनुष्य को आदर भाजन बनाती है ।

योग्यता विस्तार :

(क) कक्षा में 'मधुर' भाषण का एक कार्यक्रम आयोजित कीजिए ।

(ख) अपनी योग्यता बढाने के लिए ऊपर छाँटकर दिए गए मधुर वाक्यों को याद रखिए और अपने भाषण को सरस बनाने के लिए इसका उपयोग कीजिए ।

■ ■ ■

बोध

प्रेमचन्द

लेखक परिचय :

प्रेमचन्द का जन्म उत्तर प्रदेश के बनारस के पास लमही नामक गाँव में 31 जुलाई, सन् 1880 को एक कायस्थ परिवार में हुआ था । प्रेमचन्द के बचपन का नाम धनपतराय था । उनके पिता अजायब लाल डाक-मुंशी थे । जब प्रेमचन्द सात साल के थे, माता चल बसीं और चौदह की उम्र में पिता भी चल बसे । प्रेमचन्द ने ट्यूसन करके परिवार चलाया । आरम्भ में उन्होंने उर्दू-फारसी की शिक्षा पायी । फिर मैट्रिक परीक्षा पास की । स्कूल में बीस रुपये वेतन में अध्यापक बन गये । आगे उन्होंने बी.ए. पास किया । कुछ दिन स्कूल में अध्यापक रहने के बाद सन् 1921 ईस्वी में प्रेमचन्द गोरखपुर में स्कूलों के डिप्टी इंस्पेक्टर बन गये । उन दिनों महात्मा गांधी के नेतृत्व में अंग्रेजों के खिलाफ असहयोग ओन्दालन चलाया जा रहा था । प्रेमचन्द इससे बड़े प्रभावित हुए, फिर नौकरी से उन्होंने इस्तीफा दे दी ।

सन् 1901 के लगभग प्रेमचन्द ने पहले कहानियों को लिखना शुरू किया । 5-6 साल बाद उन्होंने उपन्यास लिखे । वे पहले उर्दू में लिखा करते थे, फिर हिन्दी में लिखा । उनकी कहानियाँ उर्दू पत्रिका 'जमाना' में छपती थीं । प्रेमचन्द ने लगभग ढाई सौ से ज्यादा कहानियाँ लिखीं, बारह उपन्यास लिखे और कुछ निबंध भी । प्रेमचन्द 'मर्यादा' और 'माधुरी' पत्रिका का संपादन किया करते थे । फिर उन्होंने बनारस में सरस्वती प्रेस की स्थापना की एवं 'हंस' मासिक तथा 'जागरण' साप्ताहिक पत्रिका का संपादन किया । सन् 1934-35 में उन्होंने बम्बई (मुम्बाई) की फिल्म दुनिया में काम किया । पर ज्यादातर उनका समय बनारस और लखनऊ में बीता ।

प्रेमचन्द की समस्त कहानियाँ 'मानसरोवर' में संकलित की गयी हैं । हिन्दी कहानी-साहित्य में प्रेमचन्द ने सबसे पहले कल्पना के बदले मानव-जीवन को विषय बनाया । आम आदमी के दु:ख-दर्द का वर्णन किया । अत: उनकी कहानियों में किसान-मजदूर की गरीब जिन्दगी के साथ मेहनती आदमी का चित्र मिलता है । नारी-जीवन की विड़म्बना को उन्होंने सहानुभूति के साथ दिखाया । उनकी रचनाओं में शोषित, दलित, दु:खी नर-नारियों के साथ पशु-पक्षियों के प्रति भी आत्मीयता तथा संवेदनशीलता मिलती है ।

प्रेमचन्द की भाषा-शैली की सबसे बड़ी विशेषता उनकी बोलचाल की भाषा है । इसमें सरल उर्दू-संस्कृत शब्दों के साथ देहाती लब्ज (शब्द) भी हैं । इसलिए भाषा बड़ी मजेदार और सजीव है ।

प्रेमचन्द की रचनाएँ हैं :- कहानी-संग्रह : मान सरोवर (आठ भाग), उपन्यास : सेवासदन, प्रेमाश्रम, रंगभूमि, कायाकल्प, निर्मला, गबन, कर्मभूमि, गोदान, मंगल-सूत्र (अपूर्ण) आदि । निबंध-संग्रह : कुछ विचार, प्रेमचन्द : विविध प्रसंग । नाटक : संग्राम, कर्बला, प्रेम की वेदी ।

विचार-बोध :

कुशल कहानीकार प्रेमचन्द की यह एक मार्मिक कहानी है । लोग जीवन में धन कमाने, प्रतिष्ठा पाने, धाक जमाने में लगे रहते हैं । इसीमें अन्याय, अत्याचार, करते रहते हैं । पर वे भूल जाते हैं कि जैसे बोओगे वैसे काटोगे ।

कहानी में तीन पात्र हैं– एक गरीब मास्टर हैं, दूसरे अमीर मुंशी हैं और तीसरे पुलिस के सिपाही । पण्डित चन्द्रधर को स्वल्प वेतन मिलता था, न बाहर की कोई आमदनी और न पदोन्नति । जिन्दगी भर बच्चों को पढ़ाते रहे, बच्चों को प्यार किया, आदमी बनाया । मुंशी बैजनाथ और ठाकुर अतिबल सिंह ने अपनी पदवी और जीविका का नाजायज फायदा उठाया, खूब धन कमाया और वे लोग ऐशो-आराम से रहे । उनमें स्नेह, दया आदि मानवीय भाव नहीं थे । कठोर आचरण था । इसका क्या परिणाम हुआ ?

कहानी आगे बढ़ती है । एक बार तीनों अयोध्या की यात्रा में निकले । रेलगाड़ी के एक डिब्बे में घुसे । वहाँ चार आदमी लेट रहे थे । उनको बैठने को जगह नहीं दी । झगड़ने लगे । क्योंकि वे पहले मुंशी जी और जमादार के हाथों सताये गये थे । किसी तरह मुंशीजी, ठाकुरजी और पण्डित चन्द्रधर अयोध्या तो पहुँचे, पर कहीं रुकनेकी जगह नहीं मिली । इतनेमें पण्डितजी के एक शिष्य कृपाशंकर मिल गये । उन्होंने अपने गुरु के पाँव छुए । सबको अपने घर ले गये, शानदार आतिथ्य किया । वह भी बड़ी खुशी से । कहा कि गुरुजी के कारण मैं आदमी बना हूँ । उनकी सेवा करके धन्य हुआ । सब लोग खुश हुए ।

पण्डितजी जिन्दगी भर गरीबी में सड़ते रहे । इससे अपने भाग्य को कोसते रहते थे । लेकिन इस घटना से उनको बोध (ज्ञान) हुआ कि शिक्षकता महान् कर्म है । वे जिन्दगी भर का दु:ख भूल गये । उन्हें अपने शिक्षक होने के महत्त्व का बोध हुआ । फिर कभी न उन्होंने अपने आपको कोसा और न शिक्षक का पद छोड़कर दूसरे विभाग में नौकरी करने की कोशिश की ।

बोध

पंडित चन्द्रधर ने एक अपर प्राइमरी में मुदर्रिसी तो कर ली थी, किंतु सदा पछताया करते कि कहाँ से इस जंजाल में आ फँसे । यदि किसी अन्य विभाग में नौकर होते तो अब तक हाथ में चार पैसे होते, आराम से जीवन व्यतीत होता । यहाँ तो महीने भर प्रतीक्षा करने के पीछे कहीं पंद्रह रुपये देखने को मिलते हैं । यह भी इधर आये, उधर गायब ! न खाने का सुख, न पहनने का आराम । हमसे तो मजूर ही भले ।

पंडित जी के पड़ोस में दो महाशय और रहते थे । एक ठाकुर अतिबल सिंह, वह थाने में हेड कान्सटेबुल थे । दूसरे मुंशी बैजनाथ । वह तहसील में सियाहेनवीस थे । इन दोनों आदमियों का वेतन पंडित से कुछ अधिक न था, तब भी उनकी चैन से गुजरती थी । संध्या को वह कचहरी से आते, बच्चों को पैसे और मिठाइयाँ देते । दोनों आदमियों के पास टहलते थे । घर में कुरसियाँ, मेजें, फर्श आदि सामग्रियाँ मौजूद थीं । ठाकुर साहब शाम को आराम कुरसी पर लेट जाते और खुशबूदार खमीरा पीते । मुंशीजी को शराब-कबाब का व्यसन था । अपने सुसज्जित कमरे में बैठे हुए बोतल की बोतल साफ कर देते । जब कुछ नशा होता तो हारमोनियम बजाते । सारे मुहल्ले में उनका रोबदाब था । उन दोनों महाशयों को आते-जाते देख कर बनिये उठकर सलाम करते । उनके लिए बाजार में अलग भाव था । चार पैसे की चीज टके में लाते । लकड़ी-ईंधन मुफ्त में मिलता । पंडित जी उनके ठाट-बाट को देखकर कुढ़ते और अपने भाग्य को कोसते । वह लोग इतना भी न जानते थे कि पृथ्वी सूर्य का चक्कर लगाती है अथवा सूर्य पृथ्वी का । साधारण पहाड़ों का भी ज्ञान न था, जिस पर भी ईश्वर ने उन्हें इतनी प्रभुता दे रखी थी । यह लोग पंडित जी पर बड़ी कृपा रखते थे । कभी सेर आध, सेर दूध भेज देते और कभी थोड़ी-सी तरकारियाँ । किन्तु इनके बदले में पंडित जी को ठाकुर साहब के दो और मुंशीजी के तीन लड़कों की निगरानी करनी पड़ती । ठाकुर साहब कहते, पंडित जी ! यह लड़के हर घड़ी खेला करते हैं, जरा इनकी खबर लेते रहिए । मुंशीजी कहते, यह लड़के आवारा हुए जाते हैं, जरा इनका ख्याल रखिए । यह बातें बड़ी अनुग्रहपूर्ण रीति से कही जाती थीं मानो पंडित जी उनके गुलाम हैं । पंडित जी को यह व्यवहार असह्य था, किंतु इन लोगों को नाराज करने का साहस न कर सकते थे, उनकी बदौलत कभी-कभी दूध-दही के दर्शन हो जाते, कभी आचार-चटनी चख लेते । केवल इतना ही नहीं, बाजार से चीजें भी सस्ती लाते । इसलिए बेचारे इस अनीति को विष के घूँट के

समान पीते । इस दुरवस्था से निकलने के लिए उन्होंने बड़े-बड़े यत्न किये थे । प्रार्थना-पत्र लिखे, अफसरों की खुशामदें कीं, पर आशा पूरी न हुई । अंत में हार कर बैठ रहे । हाँ, इतना था कि अपने काम में त्रुटि न होने देते । ठीक समय पर जाते, देर करके आते, मन लगाकर पढ़ाते । इससे उनके अफसर लोग खुश थे । साल में कुछ इनाम देते और वेतन-वृद्धि का जब कभी अवसर आता, उसका विशेष ध्यान रखते । परन्तु इस विभाग की वेतन-वृद्धि ऊसर की खेती है । बड़े भाग से हाथ लगती है । बस्ती के लोग उनसे संतुष्ट थे । लड़कों की संख्या बढ़ गयी थी और पाठशाला के लड़के भी उन पर जान देते थे । कोई उनके घर आकर पानी भर देता, कोई उनकी बकरी के लिए पत्तियाँ तोड़ लाता । पंडित जी इसी को बहुत समझते थे ।

एक बार सावन के महीने में मुंशी बैजनाथ और ठाकुर अतिबल सिंह ने श्री अयोध्या जी की यात्रा की सलाह की । दूर की यात्रा थी । हफ्तों पहले से तैयारियाँ होने लगीं । बरसात के दिन, सपरिवार जाने में अड़चन थी, किंतु स्त्रियाँ किसी भाँति भी न मानती थीं । अंत में विवश होकर दोनों महाशयों ने एक-एक सप्ताह की छुट्टी ली और अयोध्या जी चले । पंडित जी को भी साथ चलने के लिए बाध्य किया । मेले-ठेले में एक फालतू आदमी से बड़े काम निकलते हैं । पंडित जी असमंजस में पड़े, परन्तु जब उन लोगों ने उनका व्यय देना स्वीकार किया तो इन्कार न कर सके और अयोध्या जी की यात्रा का ऐसा सुअवसर पाकर न रुक सके ।

बिल्हौर से एक बजे रात गाड़ी छूटती थी । यह लोग खा-पीकर स्टेशन पर आ बैठे । जिस समय गाड़ी आयी, चारों ओर भगदड़-सी पड़ गयी– हजारों यात्री जा रहे थे । उस उतावली में मुंशीजी पहले निकल गये । पंडित जी और ठाकुर साहब साथ थे । एक कमरे में बैठे । इस आफत में कौन किसका रास्ता देखता ।

गाड़ी में जगह की बड़ी कमी थी, परन्तु जिस कमरे में ठाकुर साहब थे उसमें केवल चार मनुष्य थे । वह सब लेटे हुए थे । ठाकुर साहब चाहते थे कि वह उठ जायें तो जगह निकल आये । उन्होंने एक मनुष्य से डाँटकर कहा– उठ बैठो जी, देखते नहीं हम लोग खड़े हैं ।

मुसाफिर लेटे-लेटे बोला– क्यों उठ बैठें जी ? कुछ तुम्हारे बैठने का ठेका लिया है ?

ठाकुर– क्या हमने किराया नहीं दिया है ?

मुसाफिर– जिसे किराया दिया हो, उससे जाकर जगह माँगो ।

ठाकुर– जरा होश की बातें करो । इस डब्बे में दस यात्रियों के बैठने की आज्ञा है ।

मुसाफिर– यह थाना नहीं है, जरा जबान सँभाल कर बातें कीजिए ।

ठाकुर– तुम कौन हो जी ?

मुसाफिर– हम वही हैं जिस पर आपने खुफिया फरोसी का अपराध लगाया था और जिसके द्वार से आप नकद २५ रु. लेकर टले थे ।

ठाकुर– अहा ! अब पहचाना । परन्तु मैंने तो तुम्हारे साथ रियायत की थी । चालान कर देता तो तुम सजा पा जाते ।

मुसाफिर– और मैंने भी तो तुम्हारे साथ रियायत की कि गाड़ी नें खड़ा रहने दिया । ढकेल देता तो तुम नीचे जाते और तुम्हारी हड्डी-पसली का पता न लगता ।

इतने में दूसरा लेटा हुआ यात्री जोर से ठट्ठा मार कर हँसा और बोला– और क्यों दरोगा साहब, मुझे क्यों नहीं उठाते ?

ठाकुर साहब क्रोध से लाल हो रहे थे । सोचते थे अगर थाने में होता तो इसकी जबान खींच लेता, पर इस समय बुरे फँसे थे । वह बलवान मनुष्य थे, पर यह दोनों मनुष्य भी हट्टे-कट्टे दिख पड़ते थे ।

ठाकुर– सन्दूक नीचे रख दो, बस जगह हो जाय ।

दूसरा मुसाफिर बोला– और आप ही क्यों न नीचे बैठ जायँ । इसमें कौन-सी हेठी हुई जाती है । यह थाना थोड़े ही है कि आपके रोब में फर्क पड़ जायेगा ।

ठाकुर साहब ने उसकी ओर भी ध्यान से देखकर पूछा– क्या तुम्हें भी मुझसे कोई वैर है ?

‘जी हाँ, मैं तो आपके खून का प्यासा हूँ’ ।

‘मैंने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है, तुम्हारी तो सूरत भी नहीं देखी ।’

दू० मु० –आपने मेरी सूरत न देखी होगी, पर आपके डंडे ने देखी है । इसी कल के मेले में आपने मुझे कई डंडे लगाये । मैं चुपचाप तमाशा देखता था, पर आपने आकर मेरा कचूमर निकाल लिया । मैं चुप रह गया, घाव दिल पर लगा हुआ है । आज उसकी दवा मिलेगी ।

यह कहकर उसने और भी पाँव फैला दिया और क्रोधपूर्ण नेत्रों से देखने लगा । पंडित जी अब तक चुपचाप खड़े थे । डरते थे कि कहीं मार-पीट न हो जाय । अवसर पाकर ठाकुर साहब को समझाया । ज्योंही तीसरा स्टेशन आया, ठाकुर साहब ने बाल-बच्चों को वहाँ से निकाल कर दूसरे कमरे में बैठाया । इन दोनों दुष्टों ने उनका असबाब उठा-उठा कर जमीन पर फेंक दिया । जब ठाकुर साहब गाड़ी से उतरने लगे तो उन्होंने उनको ऐसा धक्का दिया कि बेचारे प्लेटफार्म पर गिर पड़े । गार्ड से कहने दौड़े थे कि इंजिन ने सीटी दी, जाकर गाड़ी में बैठ गये ।

उधर मुंशी बैजनाथ की और भी बुरी दशा थी । सारी रात जागते गुजारी । जरा पैर फैलाने की जगह न थी । आज उन्होंने जेब में बोतल भरकर रख ली थी । प्रत्येक स्टेशन पर कोयला-पानी ले लेते थे । फल यह हुआ कि पाचन-क्रिया में विघ्न पड़ गया । एक बार उल्टी हुई और पेट में मरोड़ होने लगी । बेचारे बड़ी मुश्किल में पड़े । चाहते थे कि किसी भाँति लेट जायँ, पर वहाँ पैर हिलाने की भी जगह न थी । लखनऊ तक तो उन्होंने किसी तरह जब्त किया । आगे चलकर विवश हो गये । एक स्टेशन पर उतर पड़े । प्लेटफार्म पर लेट गये । पत्नी भी घबरायी । बच्चों को लेकर उतर पड़ी । असबाब उतारा, परंतु जल्दी में ट्रंक उतारना भूल गयी । गाड़ी चल दी । दारोगा जी ने अपने मित्र को इस दशा में देखा तो वह भी उतर पड़े । समझ गये कि हजरत आज ज्यादा चढ़ा गये । देखा तो मुंशी जी की दशा बिगड़ गयी थी । ज्वर, पेट में दर्द, नसों में तनाव, कै और दस्त । बड़ा खटका हुआ । स्टेशन मास्टर ने यह हाल देखा तो समझे हैजा हो गया है । हुक्म दिया, रोगी को बाहर ले जाओ । विवश होकर लोग मुंशीजी को एक पेड़ के नीचे उठा ले गये । उनकी पत्नी रोने लगी । हकीम-डाक्टर की तलाश-हुई । पता लगा कि डिस्ट्रिक्ट बोर्ड की तरफ से वहाँ एक छोटा-सा अस्पताल है । लोगों की जान में जान आयी । किसी से यह भी मालूम हुआ कि डाक्टर साहब बिल्हौर के रहने वाले हैं । ढाढ़स बँधा । दारोगा जी अस्पताल दौड़े । डाक्टर साहब से समाचार कह सुनाया और कहा– आप चलकर जरा उन्हें देख तो लीजिए ।

डाक्टर का नाम था चोखेलाल । कम्पौंडर थे, लोग आदर से डाक्टर कहा करते थे । सब वृत्तांत सुनकर रुखाई से बोले– सबेरे के समय मुझे बाहर जाने की आज्ञा नहीं है ।

दारोगा– तो क्या मुंशी जी को यहीं लावें ?

चोखेलाल– हाँ, आपका जी चाहे लाइए ।

दारोगा जी ने दौड़-धूप कर एक डोली का प्रबंध किया । मुंशीजी को लाद कर अस्पताल लाये । ज्योंही बरामदे में पैर रखा, चोखेलाल ने डाँट कर कहा– हैजे (विसूचिका) के रोगी को ऊपर लाने की आज्ञा नहीं है।

बैजनाथ अचेत तो थे नहीं, आवाज सुनी, पहचाना, धीरे से बोले– अरे यह तो बिल्हौर ही के हैं– भला-सा नाम है । तहसील में आया-जाया करते हैं । क्यों महाशय । मुझे पहचानते हैं ?

चीखेलाल– जी हाँ, खूब पहचानता हूँ ।

बैजनाथ– पहचान कर भी इतनी निठुरता । मेरी जान निकल रही है । जरा देखिए, मुझे क्या हो गया ?

चोखे– हाँ, यह सब कर दूँगा और मेरा काम ही क्या ? फीस ?

दारोगा जी– अस्पताल में कैसी फीस जनाबेमन ।

चोखे– वैसे ही जैसी इन मुंशीजी ने मुझसे वसूल की थी जनाबेमन ।

दारोगा जी– आप कहते हैं, मेरी समझ में नहीं आता ।

चोखे– मेरा घर बिल्हौर में है । वहाँ मेरी थोड़ी-सी जमीन है । साल में दो बार उसकी देखभाल को जाना पड़ता है । जब तहसील में लगान जमा करने जाता हूँ, मुंशी जी डाँटकर अपना हक वसूल कर लेते हैं । न दूँ तो शाम तक खड़ा रहना पड़े । स्याहा न हो । फिर जनाब कभी गाड़ी नाव पर, कभी नाव गाड़ी पर । मेरी फीस दस रुपये निकालिए । देखूँ, दवा दूँ तो अपनी राह लीजिए ।

दारोगा– दस रुपये !!

चोखे– जी हाँ, और यहाँ ठहरना चाहें तो दस रुपये रोज ।

दारोगा जी विवश हो गये । बैजनाथ की स्त्री से रुपये माँगे । तब उसे अपने बक्से की याद आयी । छाती पीट ली । दारोगा जी के पास भी अधिक रुपये नहीं थे, किसी तरह दस रुपये निकालकर चोखेलाल को दिये– उन्होंने दवा दी । दिन भर कुछ फायदा न हुआ । रात को दशा सँभली । दूसरे दिन फिर दवा की आवश्यकता हुई । मुंशियाइन का एक गहना जो २० रु० से कम का न था बाजार में बेचा गया । तब काम चला । शाम तक मुंशीजी चंगे हुए । रात को गाड़ी पर बैठकर खूब गालियाँ दीं ।

श्री अयोध्या जी में पहुँच कर स्थान की खोज हुई । पंडों के घर में जगह न थी । घर-घर में आदमी भरे हुए थे । सारी बस्ती छान मारी, पर कहीं ठिकाना न मिला । अंत में यह निश्चय हुआ कि किसी पेड़ के नीचे डेरा जमाना चाहिए । किन्तु जिस पेड़ के नीचे जाते थे वहीं यात्री पड़े मिलते । खुले मैदान में, रेत पर पड़े रहने के सिवा और कोई उपाय न था । एक स्वच्छ स्थान देखकर बिस्तरे बिछाये और लेटे । इतने में बादल घिर आये । बूँदे गिरने लगीं । बिजली चमकने लगी । गरज से कान के परदे फटे जाते थे । लड़के रोते थे । स्त्रियों के कलेजे काँप रहे थे । अब यहाँ ठहरना दुस्सह था, पर जायें कहाँ ।

अकस्मात् एक मनुष्य नदी की तरफ से लालटेन लिए आता हुआ दिखायी दिया– वह निकट पहुँच गया तो पंडित जी ने उसे देखा । आकृति कुछ पहिचानी हुई मालूम हुई। किंतु यह विचार न आया कि कहाँ देखा है । पास जाकर बोले– क्यों भाई साहब, यहाँ यात्रियों के ठहरने के लिए जगह न मिलेगी ? वह मनुष्य रुक गया । पंडित जी की ओर ध्यान से देखकर बोला– आप पंडित चंद्रधर तो नहीं हैं ?

पंडित जी प्रसन्न होकर बोले– जी हाँ । आप मुझे कैसे जानते हैं ?

उस मनुष्य ने सादर पंडित जी के चरण छुए और बोला– मैं आपका पुराना शिष्य हूँ । मेरा नाम कृपाशंकर है । मेरे पिता कुछ दिनों बिल्हौर के डाक-मुंशी रहे थे । उन्हीं दिनों मैं आपकी सेवा में पढ़ता था ।

पंडित जी की स्मृति जागी, बोले– ओहो तुम्हीं हो कृपाशंकर ! तब तो तुम दुबले-पतले लड़के थे, कोई आठ-नौ साल हुए होंगे ।

कृपा– जी हाँ, नवाँ साल था । मैंने वहाँ से आकर इन्ट्रेस पास किया, अब यहाँ म्युनिसिपिल्टी में नौकर हूँ । कहिए आप तो अच्छी तरह रहे । सौभाग्य था कि आपके दर्शन हो गये ।

पंडित– मुझे भी तुमसे मिल कर बड़ा आनंद हुआ । तुम्हारे पिता अब कहाँ हैं ?

कृपा– उनका तो देहांत हो गया । माता साथ हैं । आप यहाँ कब आये ।

पंडित– आज ही आया हूँ । पंडों के घर में जगह न मिली । विवश होकर यहीं रात काटने की ठहरी ।

कृपा– बाल-बच्चे भी साथ हैं ?

पंडित– नहीं, मैं तो अकेले ही आया हूँ । पर मेरे साथ दारोगा जी और सियाहेनवीस साहब हैं– उनके बाल-बच्चे भी साथ हैं ।

कृपा– कुल कितने मनुष्य होंगे ?

पंडित जी– हैं तो दस, किन्तु थोड़ी-सी जगह में निर्वाह कर लेंगे ।

कृपा– नहीं साहब, बहुत-सी जगह लीजिए । मेरा बड़ा मकान खाली पड़ा है । चलिये, आराम से एक, दो, तीन दिन रहिये । मेरा परम सौभाग्य है कि आपकी कुछ सेवा करने का अवसर मिला ।

कृपाशंकर ने कई कुली बुलाये । असबाब उठवाया और सबको अपने मकान पर ले गया । साफ-सुथरा घर था । नौकर ने चटपट चारपाइयाँ बिछा दीं । घर में पूरियाँ पकने लगीं । कृपाशंकर हाथ बाँधे सेवक की भाँति दौड़ता था । हृदयोल्लास से उसका मुख-कमल चमक रहा था । उसकी विनय और नम्रता ने सबको मुग्ध कर लिया ।

और सब लोग तो खा-पीकर सोये । किंतु पंडित चंद्रधर को नींद नहीं आयी । उनकी विचार शक्ति इस यात्रा की घटनाओं का उल्लेख कर रही थी । रेलगाड़ी की रगड़-झगड़ और चिकित्सालय की नोच-खसोट के सम्मुख कृपाशंकर की सहायता और शालीनता प्रकाशमय दिखायी देती थी ।

पंडित जी ने आज शिक्षक का गौरव समझा ।

उन्हें आज इस पद की महानता ज्ञात हुई ।

यह लोग तीन दिन अयोध्या रहे । किसी बात का कष्ट न हुआ । कृपाशंकर ने उनके साथ जाकर प्रत्येक धाम का दर्शन कराया ।

तीसरे दिन जब लोग चलने लगे तो वह स्टेशन तक पहुँचाने आया । जब गाड़ी ने सीटी दी तो उसने सजल नेत्रों से पंडित जी के चरण छुए और बोला, कभी-कभी इस सेवक को याद करते रहिएगा ।

पंडित जी घर पहुँचे तो उनके स्वभाव में बड़ा परिवर्त्तन हो गया था । उन्होंने फिर किसी दूसरे विभाग में जाने की चेष्टा नहीं की ।

●

शब्दार्थ :

बोध – ज्ञान, जानकारी, तसल्ली । मुदर्रिसी – अध्यापक की नौकरी, शिक्षकता । जंजाल – झंझठ, बखेड़ा । मजूर – मजदूर । मुंशी – मुहरिर, कायस्थों की एक उपाधि । तहसील – तहसीलदार का दफ्तर या कचहरी । सियाहेनवीस – सरकारी खजाने में सियाहा लिखनेवाला । सियाहा – आय-व्यय की बही अथवा रोजनामचा; सरकारी खजाने का वह रजिस्टर जिसमें जमीन से प्राप्त मालगुजारी लिखी जाती है । खमीरा – कटहल या अन्य फल आदि का सड़ाव जो तम्बाकू में डाला जाता है । कबाब – सीखों पर भूना हुआ मांस । रोबदाब – बड़प्पन की धाक, दबदबा । बनिया – व्यापारी, आटा-दाल आदि बेचनेवाला । टका – अधन्ना, दो पैसे । ठाठ-बाट – आड़म्बर, सजधज, तड़क-भड़क । कुढ़ते – मन ही मन खीझते या चिढ़ते । कोसते – गालियाँ देते । निगरानी – देखरेख । आवारा – व्यर्थ इधर-उधर फेरनेवाला । अनुग्रहपूर्ण – दयापूर्वक । उनकी बदौलत– उनके कारण से । ऊसर – क्षारमृत्तिका या खारी जमीन; वह भूमि जिसमें रेह या लोनी मिट्टी अधिक होनेके कारण पानी बरसने पर भी घास तक नहीं जमती । मेले-ठेले – भीड़-भाड़ । असमंजस– दुविधा, भगदड़–सी– भागनेकी भांति । खुफिया – गुप्त, छिपा हुआ । फरोसी – बेचनेवाला । रियायत – छूट, नरमी । चालान – किसी अपराधी का पकड़ा जाकर न्याय के लिए न्यायालय में भेजा जाना । ढकेल देना– धक्के से गिरा देना । ठट्ठा मारकर हँसना – उपहास करना । दरोगा – थानेदार । जबान – जीभ । हटे-कट्टे– हृष्ट-पुष्ट । सन्दूक – पिटारा, बक्स । हेठी– तौहीन या मानहानि । रोब – बड़प्पन की धाक, दबदबा । वैर-दुश्मनी । तमाशा– वह दृश्य जिसके देखनेसे मनोरंजन हो । कचूमर निकालना – कुचलना या कूटना या पीटना । असबाब– वस्तु, सामान । उल्टी– वमन, कै । हजरत – महाशय, खोटा आदमी । नस – स्नायु । कै– उल्टी । दस्त– पतला पायखाना । खटका – भय, चिन्ता । हैजा – विशूचिका, दस्त और कै की बीमारी । हकीम– चिकित्सक । ढाढस– आश्वासन, तसल्ली, धैर्य । डोली– एक प्रकार की सवारी जिसे कहार कंधों पर लेकर चलते हैं, पालकी, शिविका । बरामदा– दालान, बारजा ।

जनाब– महाशय, बड़ों के लिए आदरसूचक शब्द । स्याहा – सरकारी खजानेका वह रजिस्टर जिसमें जमीन से प्राप्त मालगुजारी लिखी जाती है, भूमिकर । चंगा – स्वस्थ । डेरा– पड़ाव, टिकान । चारपाई – खाट, खटिया । नोच-खसोट – झीना-झपटी । शालीनता – विनम्रता ।

प्रश्न और अभ्यास

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दो-तीन वाक्यों में दीजिए :

(क) पण्डित चन्द्रधर हमेशा क्यों पछताया करते थे ?

(ख) पण्डितजी क्यों कहा करते थे कि 'हम से तो मजूर ही भले ?

(ग) ठाकुर अतिबल सिंह और मुंशी बैजनाथ के लिए बाजार में कैसे अलग भाव था ?

(घ) ठाकुर साहब और मुंशीजी की कृपा के बदले में पण्डितजी को क्या करना पड़ता था ?

(ङ) अपनी दुरवस्था से निकलनेके लिए पण्डितजी ने क्या किया ?

(च) पण्डितजी पर अफसर लोग क्यों खुश थे ?

(छ) पहले मुसाफिर ने ठाकुर अतिबल सिंह को गाड़ी में क्यों नहीं बैठने दिया ?

(ज) ठाकुर साहब ने दूसरे मुसाफिर का क्या बिगाड़ा था ?

(झ) डाक्टर चोखेलाल मुंशी बैजनाथ से क्यों नाराज था ?

(ञ) पण्डित चन्द्रधर को नींद क्यों नहीं आयी ?

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्यों में दीजिए :

(क) पण्डित चन्द्रधर ने कहाँ मुदर्रिसी की थी ?

(ख) पण्डित जी के पड़ोस में कौन-कौन रहते थे ?

(ग) सन्ध्या को कचहरी से आने पर मुंशी बैजनाथ क्या करते थे ?

(घ) ठाकुर साहब शाम को क्या करते थे ?

(ङ) दोनों महाशयों को आते-जाते देखकर बनिये क्या करते थे ?

(च) पण्डित जी अपने भाग्य को क्यों कोसते थे ?

(छ) मुंशी जी ने पण्डितजी को किसका ख्याल रखनेको कहा और क्यों ?

(ज) ऊसर की खेती किसे कहा गया है ?

(झ) पहले मुसाफिर पर ठाकुर साहब ने कौन-सा अपराध लगाया था और कितने रुपये लेकर वे टले थे ?

(ञ) दूसरे मुसाफिर ने ठाकुर साहब से नीचे बैठ जाने की बात करते हुए क्या कहा ?

(ट) कृपाशंकर ने बिल्हौर से कौन-सी परीक्षा पास की और अयोध्या में किस पद पर तैनात हुआ था ?

(ठ) पण्डित जी को किस बात का बोध हुआ ?

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-एक शब्द में दीजिए :

(क) 'बोध' कहानी किसने लिखी है ?

(ख) पण्डित चन्द्रधर ने अपर प्राइमरी में कौन-सी नौकरी की थी ?

(ग) कौन सदा पछताया करते थे कि कहाँ से इस जंजाल में आ फँसे ?

(घ) महीने भर प्रतीक्षा करने के बाद पण्डित जी को कितने रुपये देखने को मिलते थे ?

(ङ) तहसील में सियाहेनवीस कौन था ?

(च) ठाकुर साहब आराम कुर्सी पर लेटकर क्या पीते थे ?

(छ) मुंशी जी को कौन-सा व्यसन था ?

(ज) अफसर लोग किस पर खुश थे ?

(झ) वेतन-वृद्धि को किसकी खेती कहा गया है ?

(ञ) कौन-से महीने में मुंशी बैजनाथ और ठाकुर अतिबल सिंह अयोध्या की यात्रा के लिए निकले थे ?

(ट) दोनों महाशयों ने कितने सप्ताह की छुट्टी ली ?

(ठ) बिल्हौर से कितने बजे गाड़ी छूटती थी ?

(ड) डाक्टर चोखेलाल कहाँ के रहनेवाले थे ?

(ढ) किसकी विनय और नम्रता ने सब को मुग्ध कर लिया ?

(ण) शिक्षक का गौरव किसने समझा ?

(त) सभी लोग अयोध्या में कितने दिन रहे ?

4. निम्नलिखित अवतरणों का अर्थ स्पष्ट कीजिए :

(क) हमसे तो मजूर ही भले ।

(ख) परन्तु इस विभाग की वेतन-वृद्धि ऊसर की खेती है ।

(ग) कभी गाड़ी नाव पर, कभी नाव गाड़ी पर ।

(घ) पण्डित जी ने आज शिक्षक का गौरव समझा ।

5. रिक्त स्थानों को भरिए :

(क) __________ पैसे की चीज टके में लाते ।

(ख) ईश्वर ने उन्हें इतनी __________ दे रखी थी ।

(ग) आपने आकर मेरा __________ निकाल दिया ।

(घ) दारोगा जी ने __________ कर एक डोली का प्रबन्ध किया ।

(ङ) मेरे पिता कुछ दिनों बिल्हौर के __________ रहे थे ।

6. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दिये गये विकल्पों में से चुनकर लिखिए :

(क) पण्डित चन्द्रधर को कितने रुपये मासिक वेतन मिलता था ?

(i) दस (ii) पचास (iii) पन्द्रह (iv) सौ ।

(ख) मुंशी बैजनाथ के कितने लड़के थे ?

(i) दो (ii) चार (iii) तीन (iv) पाँच

(ग) 'इसमें कौन-सी हेठी हुई जाती है'। यह वाक्य किसने कहा ?

(i) पहले मुसाफिर ने (ii) पण्डित चन्द्रधर ने

(iii) दूसरे मुसाफिर ने (iv) मुंशी बैजनाथ ने

(घ) 'आपके खून का प्यासा हूँ' का अर्थ है–

(i) खून पीना चाहता हूँ (ii) प्यास बुझाना चाहता हूँ

(iii) वध करना चाहता हूँ (iv) मार-पीट करना चाहता हूँ ।

(ङ) 'पण्डित जी ने आज शिक्षक का गौरव समझा' का आशय है–

(i) शिक्षकता का महत्त्व अधिक है ।

(ii) सबसे बड़ी नौकरी शिक्षक की है ।

(iii) दूसरी नौकरियों का कोई महत्त्व नहीं है ।

(iv) शिक्षक बननेमें वेतन अधिक मिलता है ।

भाषा-ज्ञान

1. निम्नलिखित वाक्यों को पढ़िए :

(क) पण्डित चन्द्रधर ने, एक अपर प्राइमरी में मुदर्रिसी की थी ।

(ख) पण्डित जी के पड़ोस में दो महाशय और रहते थे ।

(ग) ठाकुर साहब शाम को आराम कुरसी पर लेट जाते थे ।

(घ) गाड़ी में जगह की बड़ी कमी थी ।

(ङ) ठाकुर साहब क्रोध से लाल हो रहे थे ।

(च) ठाकुर साहब ने बाल-बच्चों को वहाँ से निकालकर दूसरे कमरे में बैठाया ।

- पहले वाक्य में 'पण्डित चन्द्रधर ने', 'एक अपर प्राइमरी में', 'मुदर्रिसी';
- दूसरे वाक्य में 'पण्डितजी के', 'पड़ोस में';
- तीसरे वाक्य में 'ठाकुर साहब', 'शाम को', 'आराम कुरसी पर';
- चौथे वाक्य में 'गाड़ी में', 'जगह की';
- पांचवें वाक्य में 'ठाकुर साहब', 'क्रोध से';
- छठे वाक्य में 'ठाकुर साहब ने', 'बाल-बच्चों को', 'वहाँ से निकालकर', 'दूसरे कमरे में - आदि पद संज्ञा-शब्द के रूप हैं । इनका संबंध क्रमशः 'की थी', 'रहते थे', 'लेट जाते थे', बड़ी कमी थी', 'हो रहे थे', 'बैठाया' आदि क्रियाओं से सूचित हो रहा है । इसलिए ये शब्द कारक हैं।

याद रखिए– संज्ञा व सर्वनाम शब्दों का वाक्य के अन्य शब्दों से, क्रिया से संबंध बतानेवाले शब्द-रूपों को कारक कहते हैं ।

साथ-साथ विभक्ति या परसर्ग को भी जानिए–

ऊपर दिये गये वाक्यों में संज्ञाओं का क्रिया से संबंध बतानेके लिए कुछ चिह्नों जैसे– ने, में, के, को, पर, की, से आदि का प्रयोग किया गया है । इन चिह्नों को विभक्ति-चिह्न कहते हैं ।

याद रखिए– वाक्य में प्रयुक्त संज्ञा को, कर्म, आदि में विभक्त करनेवाले या कारकों का रूप प्रकट करने के लिए प्रयोग में आनेवाले शब्द-चिह्नों को विभक्ति कहते हैं ।

संज्ञा, सर्वनाम आदि शब्दों के बाद अर्थात् अंत में जुड़नेके कारण विभक्ति को 'परसर्ग' भी कहा जाता है । कभी-कभी कुछ वाक्यों में कुछ शब्दों के साथ विभक्ति का प्रयोग नहीं होता ।

जैसे – 'ठाकुर साहब क्रोध से लाल हो रहे थे ।'

इस वाक्य में 'ठाकुर साहब' के बाद किसी विभक्ति या परसर्ग का प्रयोग नहीं हुआ है । ऐसे वाक्यों में शब्द-क्रम या अर्थ के आधार पर क्रिया से संज्ञा का संबंध स्पष्ट होता है ।

2. विभक्ति-संबंधी अशुद्धियों पर ध्यान दीजिए :

- संज्ञा शब्द के साथ विभक्ति का प्रयोग होने पर इसे अलग लिखा जाता है ।

  जैसे– 'ठाकुर साहब ने बाल-बच्चों को दूसरे कमरे में बैठाया' ।

इस वाक्य में 'ठाकुर साहब', 'बाल-बच्चों' और 'कमरे' संज्ञा-शब्द हैं और इनके साथ प्रयुक्त क्रमश: 'ने', 'की' और 'में' आदि विभक्तियों का प्रयोग अलग हुआ है ।

- सर्वनाम के साथ विभक्ति का प्रयोग होने पर इसे मिलाकर लिखा जाता है

  जैसे– 'मैंने आपका क्या बिगाड़ा है' ?

इस वाक्य में 'मैं' और 'आप' सर्वनाम-शब्द हैं । इनके साथ प्रयुक्त क्रमश: 'ने' और 'का' प्रयोग मिलकर हुआ है ।

- वाक्य में 'ने' के प्रयोग पर ध्यान देना आवश्यक है ।

  जैसे– 'मैंने कुछ का कुछ लिख दिया है ।' ठीक है । पर यह कहना कि 'मैं कुछ का कुछ लिख दिया हूँ' गलत है ।

- कुछ जगह 'ने' के प्रयोग की आवश्यकता नहीं है ।

  जैसे– 'सब लोग खा-पीकर सोये' । ठीक है ।

  पर यह कहना कि 'सब लोगों ने खा-पीकर सोये' गलत है ।

- कभी-कभी 'ने' के प्रयोग को सही नहीं माना जाता ।

  जैसे– 'उसने कटक जाना था' ।

  यहाँ 'ने' का प्रयोग गलत है ।

  अत: यह कहना ठीक होगा–

  'उसे कटक जाना था' ।

- वाक्य में 'को' विभक्ति के प्रयोग पर ध्यान दें–

  –वह अपने भाग्य को कोस रहा है । (सही)

  –वह अपना भाग्य कोस रहा है । (गलत)

  –पुस्तक लाओ । (सही)

  –पुस्तक को लाओ । (गलत)

  –सबको भगवान् की पूजा करनी चाहिए । (सही)

  –सबको भगवान को पूजना चाहिए । (गलत)

  –राम कहीं काम से गया है । (सही)

  –राम कहीं काम को गया है । (गलत)

- वाक्य में 'से' विभक्ति के सही प्रयोग को समझें –

  – राम देर से स्कूल जाता है । (सही)

  राम देर को स्कूल जाता है । (गलत)

  – इसी बहाने हम चले आये । (सही)

  इसी बहाने से हम चले आये । (गलत)

– सबको नमस्ते कहियेगा । (सही)

सबसे नमस्ते कहियेगा । (गलत)

– वह मुझ पर नाराज है । (सही)

वह मुझ से नाराज है । (गलत)

– सीता साइकिल से कॉलेज आती है । (सही)

सीता साइकिल में कॉलेज आती है । (गलत)

- **वाक्य में 'में' विभक्ति का प्रयोग देखें –**

– राम दिन में एक बार भी नही मिला । (सही)

राम दिन भर एक बार भी नहीं मिला । (गलत)

– कल रात पण्डित जी को नींद नहीं आयी । (सही)

कल रात में पण्डित जी को नींद नहीं आयी । (गलत)

– परस्पर सहयोग होना चाहिए । (सही)

परस्पर में सहयोग होना चाहिए । (गलत)

– पक्षी पेड़ पर बैठा है । (सही)

पक्षी पेड़ में बैठा है । (गलत)

अभ्यास कार्य

1. निम्नलिखित वाक्यों में रेखांकित पदों के कारक बताइए :

(क) खुले मैदान में, रेत पर पड़े रहने के सिवा और कोई उपाय न था ।

(ख) मुझे भी तुमसे मिल कर बड़ा आनन्द हुआ ।

(ग) मेरा परम सौभाग्य है कि आपकी कुछ सेवा करने का अवसर मिला ।

(घ) रेलगाड़ी की रगड़-झगड़ और चिकित्सालय की नोच-खसोट के सम्मुख कृपाशंकर की सहायता और शालीनता प्रकाशमय दिखायी देती थी ।

2. निम्नलिखित वाक्यों के खाली स्थानों को उपयुक्त परसर्गों से पूरा कीजिए :

(क) अब तक हाथ _______ चार पैसे होते, आराम _______ जीवन व्यतीत होता ।

(ख) मैं _______ तुम्हारे साथ रियायत _______ थी ।

(ग) आपने _______ सूरत न देखी होगी, पर आपके डंड _______ देखी है ।

(घ) खुले मैदान ________, रेत _______ खड़े थे ।

3. निम्नलिखित शब्दों से भाववाचक संज्ञा बनाइए :–

पण्डित —	बुरा —
मौजूद —	अच्छा —
प्रभु —	विनम्र —
शालीन —	महान् —

4. रेखांकित पदों के संज्ञा- भेद लिखिए –

(क) जरा जबान सँभाल कर बातें कीजिए ।

(ख) इन दोनों दुष्टों ने उनका असबाब फेंक दिया ।

(ग) प्रत्येक स्टेशन पर कोयला-पानी ले लेते थे ।

(घ) लोगों की जान में जान आयी ।

(ङ) कृपाशंकर ने पण्डित जी के चरण छुए ।

(च) मेले-ठेले में एक फालतू आदमी से बड़े काम निकलते हैं ।

5. रेखांकित पदों के कारक बताइए –

(क) मुसाफिर ने क्रोधपूर्ण नेत्रों से देखा ।

(ख) दारोगा जी ने अपने मित्र की बुरी दशा देखी ।

(ग) वे लोग खुले मैदान में, रेत पर पड़े रहे ।

(घ) कृपाशंकर ने कई कुली बुलाये ।

(ङ) वे लोग मुंशी जी को एक पेड़ के नीचे उठा ले गये ।

याद रखिए– कारक आठ प्रकार के होते हैं – कर्त्ता कारक, कर्म कारक, करण कारक, संप्रदान कारक, अपादान कारक, संबंध कारक, अधिकरण कारक और संबोधन कारक ।

6. निम्नलिखित वाक्यों में से कारक छाँटिए और उनके नाम भी लिखिए : –

(i) मुंशी जी को शराब-कबाब का व्यसन था ।

(ii) माता ने बच्चे को सुलाया ।

(iii) ठाकुर साहब गाड़ी से उतरने लगे ।

(iv) लोग आदर से डाक्टर कहा करते थे ।

■ ■ ■

देशप्रेमी संन्यासी

संकलित

विचार-बोध :

स्वामी विवेकानन्द भारत माता के विरल सुपुत्र थे । उन्होंने अपनी प्रचंड प्रतिभा, गंभीर ज्ञान और असाधारण वाक्शक्ति द्वारा विदेशों में भारतीय दर्शन, वेद-वेदांत का महत्त्व प्रमाणित किया । स्वामीजी ने अमेरीका और इंग्लैंड के विद्वानों को समझा दिया कि हिंदू धर्म सहनशील और मानवीय है । उसमें संकीर्णता या कट्टरता नहीं है । उन्होंने देश के लोगों को भी जगाया, सेवा का कार्य किया । कराया भी । देश का नाम उजागर किया । वे संन्यासी थे । सदा के लिए नमस्य भी ।

स्वामीजी ने भारतीयों को सुखभोग त्यागकर सादा-सीधा जीवन बीताने को कहा । सदा कर्म-तत्पर रहने, निराशा और आलस्य को छोड़ने को उत्साहित किया । सदैव जाग्रत रहने के लिए अपने भाषण में आह्वान किया था । भारत हमारा सिरमौर है । इसे भारतीय को भूलना नहीं चाहिए । स्वामीजी ने अमेरीका और इंग्लैण्ड जैसे समृद्धिशाली देशों में जाकर भारतीय ज्ञान का, दार्शनिक विचारों का अपने वक्तव्य के जरिये प्रचार-प्रसार किया ।

रामकृष्ण परमहंस के वे उपयुक्त शिष्य थे । आज देश भर में तथा विदेशों में इनकी अनेक संस्थाएँ भारतीय संस्कृति और दर्शन के प्रचार-प्रसार में लगी हैं । देश-विदेश में भारत के नाम को रोशन करने वाला संन्यासी और कोई नहीं स्वामी विवेकानंद ही हैं जिनका स्मरण आज देश-विदेशों में लोग कर रहे हैं ।

देशप्रेमी संन्यासी

हम देखते हैं कि कुछ लोग धन कमाने में जुटे रहते हैं । कुछ लोग सुख भोगने को व्याकुल रहते हैं । कुछ ऐसे हैं जिनको संन्यासी कहते हैं । वे लोग अपनी इच्छा से घरबार छोड़ देते हैं । सुख के साधनों का त्याग कर देते हैं । गरीबी में जीते हैं । संसार को माया का जंजाल समझते हैं । पर आश्चर्य है कि ऐसे लोगों में कुछ अपनी मातृभूमि

से बेहद प्यार करते हैं । एक ऐसे संन्यासी थे स्वामी विवेकानन्द । देखने में बहुत सुन्दर । बड़े ज्ञानी और पंडित । सरल, विनयी और मिष्टभाषी । लेकिन प्रचण्ड प्रतिभाशाली ।

सालों पहले की बात है । भारत पराधीन था । यहाँ अंग्रेजों का शासन चलता था । 1857 में लोग एक बार कोशिश करके पराजित हो गए थे । निराशा, आलस्य और कर्महीनता में डुबे हुए थे । ऐसे समय स्वामीजी ने अपने देशवासियों को ललकारा–

''मेरे प्यारे देशवासियों ! उठो, जागो ।जीवन का वरदान स्वतन्त्रता है । उसे प्राप्त करो । गर्व से कहो कि मैं भारतीय हूँ ! हर भारतीय मेरा भाई है । भारत मेरा जीवन है, मेरा प्राण है । भारत के देवता मेरा भरणपोषण करते हैं । भारत मेरे बचपन का हिंडोला है, मेरे यौवन का आनन्द लोक है और मेरे बुढ़ापे का बैकुंठ है ।''

एक बार स्वामीजी अमेरीका गए । वहाँ बड़ी धर्मसभा हो रही थी । उन्होंने बड़ी मर्मस्पर्शी वाणी में भारत के धर्म, आचार-विचार, ऋषि-मुनियों के चिंतन, आध्यात्मिक दृष्टिकोण का महत्व प्रतिपादित किया । अपने सुंदर, सरल, अर्थपूर्ण अंग्रेजी भाषण द्वारा स्वामीजी ने सबके दिलों को अभिभूत कर दिया ।

स्वामीजी एक साल इंग्लैण्ड में रहे । वहाँ भारत के मालिक अंग्रेज विद्वानों को अपनी विद्वत्ता से प्रभावित किया । वे भी मान गए कि भारत में गरीबी भले ही हो, लेकिन वह ऊँचे विचारों और चिंतन के धनी है, अगुवा है ।

स्वामीजी ने अपने असंख्य अनुयायियों को मानव-सेवा, ज्ञान तथा धर्म-प्रचार में लगाया । रामकृष्ण परमहंस उनके गुरु थे । उन्हीं के नाम से रामकृष्ण मिशन बनाया । आज भी देश-विदेश में उनकी अनेक संस्थाएँ जनता की सेवा में डटी हुई हैं ।

देश-विदेशों में भारत के नाम को रोशन करनेवाला स्वामी जी जैसा दूसरा कोई नहीं दिखाई देता । देश को आजाद करने में, उसे सदा जाग्रत रखने में ऐसे संन्यासियों का बड़ा योगदान रहा ।

●

शब्दार्थ और टिप्पणी :

मिष्टभाषी – मधुरभाषी । जंजाल – झंझट । बैकुण्ठ – स्वर्ग । भरणपोषण – अन्नवस्त्र देना । अभिभूत – मोहित, द्रवित । संन्यासी – गृह त्यागी साधु ।

प्रश्न और अभ्यास

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दो-तीन वाक्यों में दीजिए :

(क) हम संन्यासी किसे कहते हैं ?

(ख) विवेकानंद का व्यक्तित्व कैसा था ?

(ग) विवेकानंद ने देशवासियों को क्या कहकर ललकारा ?

(घ) अमेरीका की धर्मसभा में स्वामीजी ने अपने भाषण में किस बात को प्रतिपादित किया ?

(ङ) स्वामीजी ने इंग्लैण्ड के लोगों को कैसे प्रभावित किया ?

(च) स्वामीजी ने अपनी अनुयायियों को किन-किन कामों में लगाया ?

(छ) 1857 के बाद हमारे देश के लोग किस स्थिति में थे ?

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-एक वाक्य में दीजिए :

(क) भारत कब पराधीन था ?

(ख) जीवन का वरदान क्या है ?

(ग) अंग्रेज क्या मान गये ?

(घ) देश को आजाद करने में किनका योगदान रहा ?

(ङ) कौन रामकृष्ण परमहंस के उपयुक्त शिष्य थे ?

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक शब्द / एक वाक्य में दीजिए :

(क) धर्म सभा कहाँ हो रही थी ?

(ख) देशप्रेमी सन्यासी कौन हैं ?

(ग) स्वामीजी इंलैण्ड में कबतक रहे ?

(घ) स्वामीजी के अनुसार हमारा भरण पोषण कौन करता है ?

(ङ) स्वामीजी के गुरु कौन थे ?

(च) सालों पहले भारत में किसका शासन चलता था ?

(छ) स्वामीजी बूढ़ापे का बैकुण्ठ किसे मानते हैं ?

(ज) स्वामीजी के बचपन का हिण्डोला कौन था ?

(झ) प्रत्येक भारतीय स्वामीजी के लिए क्या था ?

(ञ) स्वामीजी ने किसे जीवन का बरदान समझा ?

भाषा-ज्ञान

1. निम्नलिखित शब्दों के लिंग बताइए :

वाणी, विद्वान, अंग्रेजी, दृष्टिकोण, आजादी, देश, सन्यासी, गरीबी, निराशा, आनन्द, बूढ़ापा

2. निम्नलिखित शब्दों के पर्यायवाची शब्द लिखिए :

विद्वान, आजाद, साल, मानव, व्याकुल, इच्छा

3. निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध करके लिखिए :

(क) सालों पहले का बात है ।

(ख) रामकृष्ण परमहंस विवेकानंद का गुरु थे ।

(ग) देश में रामकृष्ण मिशन का अनेक संस्थाएँ हैं ।

(घ) गर्व में कहो की मैं भारतीय हूँ ।

(ङ) भारत मेरी जीवन है ।

4. निम्नलिखित में से विशेषण पद छाँटकर लिखिए :

(क) मेरे प्यारे देश वासियों !

(ख) यहाँ अंग्रेजों का कड़ा शासन चलता था ।

(ग) भारत मेरे बचपन का हिंडोला है ।

(घ) मेरे यौवन का आनंद लोक है ।

(ङ) भारत मेरे बचपन का बैकुण्ठ है ।

5. निम्नलिखित वाक्यों में विराम चिह्न लगाइए :–

(क) मेरे प्यारे देशवासियों उठो जागो ।

(ख) निराशा आलस्य और कर्म हीनता में डुबे हुए थे

(ग) उनकी सुन्दर सरल अर्थपूर्ण अंग्रेजी भाषाण ने सब के दिलों को अभिभूत कर दिया

(घ) स्वामीजी ने असंख्य अनुयायियों को मानव सेवा ज्ञान तथा धर्म प्रचार में लगाया

अभ्यास-कार्य

(i) ऐसे कुछ अन्य महापुरुषों की जीवनी पढ़कर उनके व्यक्तित्व और कृत्तित्व के बारे में जानिए ।

(ii) इस विषय को कमसे कम दो बार पढ़िए ।

■ ■ ■

गिल्लू

महादेवी वर्मा

लेखिका का परिचय :

महादेवी वर्मा का जन्म उत्तरप्रदेश के फर्रुखाबाद शहर में सन् 1907 को हुआ। उनकी माता हेमरानी और पिता गोविन्दप्रसाद वर्मा– दोनों कुलीन और धनी परिवार के थे। महादेवी का बचपन सुख-चैन से बीता।

महादेवी ने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से संस्कृत में एम.ए. पास किया; फिर वे प्रयाग महिला विद्यापीठ में प्रिंसिपल बन गयीं। उन्होंने हजारों लड़कियों को पढ़ाया, नारी-शिक्षा के क्षेत्र में उनका अमूल्य योगदान रहा।

महादेवीजी विदुषी, जागरूक और सहानुभूतिशील थीं। उनके पास तेज बुद्धि थी और कोमल हृदय था। उन्होंने जीवन और जगत को निकट से देखा। केवल मनुष्य ही नहीं, अपितु जीव-जन्तुओं तक के सुख-दु:ख को उन्होंने पहचाना, अनुभव किया; समाज में फैले अनाचार, अत्याचार और विषमता का अनुभव किया; लोगों की आशा-आकांक्षा, इच्छा-अभिलाषा, पीड़ा-वेदना को समझा। उनको सरल भाव-पूर्ण भाषा में व्यक्त किया। ऐसा सजीव वर्णन किया कि पढ़ने से आँखों के सामने चित्र उभर आते हैं।

महादेवी ने नारी के महत्त्व को समझा, उसके त्याग और बलिदान से प्रेरणा ली। उन्होंने नारी के स्नेह-प्रेम, त्याग-ममता, दु:ख-दर्द और क्षमताओं की बेजोड़ छवियाँ आँकीं। नारी को उन्होंने दीपशिखा कहा, जो खुद जलकर सबको आलोक प्रदान करती है। वह नीरभरी दु:ख की बदली है। बदली खुद दु:ख सहकर करुणा से विगलित हो, धरती पर जल बरसाकर उसे सुख, शान्ति, शीतलता से भर देती है; जीवन को हरा-भरा कर देती है। उसी तरह नारी भी दु:ख सहकर सबको आनंद देती है। महादेवी प्यार और पीड़ा की लेखिका हैं। अपनी कविताओं में उन्होंने मानव की पीड़ा, वेदना, विवशता और शक्ति-सामर्थ्य का वर्णन किया। इसलिए उनके काव्य अत्यन्त तरल और मार्मिक बन गये। वे छायावाद युग की प्रख्यात कवयित्री हो गयीं।

महादेवी की रचनाओं में विचार हैं तो भाव भी हैं; कल्पना है तो चित्र भी है; सजीवता है, सूक्ष्मता है, करुणा है, शक्ति का संदेश भी है। इसलिए महादेवी कविता तथा गद्य– दोनों

में सिद्धहस्त हैं; अत: उनकी रचनाएँ पाठक के मर्म को छू लेती हैं । महादेवी जी ने ईश्वर की चेतना, मानव-मन की कोमलता, स्नेह-प्रेम, करुणा-वेदना को अपनी गद्य-रचनाओं में भी उजागर किया । विचारों के साथ कोमल भावनाओं को पिरोया; सूक्ष्म निरीक्षण किया । उनकी गद्य-रचनाएँ पाठक की आँखों के सामने चित्र खड़े कर देती हैं । उन्होंने साफ-सुथरी, संस्कृत शब्दों से भरी सुन्दर भाषा का प्रयोग किया ।

महादेवी की कुछ प्रमुख रचनाएँ हैं –

काव्य : नीहार, रश्मि, नीरजा, सांध्यगीत और दीपशिखा ।

रेखाचित्र : अतीत के चलचित्र, स्मृति की रेखाएँ ।

संस्मरण : पथ के साथी ।

निबंध तथा भूमिकाएँ – श्रृंखला की कड़ियाँ, महादेवी का विवेचनात्मक गद्य, क्षणदा और संकल्पिता ।

उन्होंने 'चाँद' पत्रिका की संपादना की । उन्हें मंगला प्रसाद पारितोषिक, पद्म भूषण तथा ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित किया गया है ।

विचार-बोध :

प्रस्तुत निबंध 'गिल्लू' महादेवी का एक संस्मरण है । उनकी स्मरण-शक्ति इतनी प्रखर है कि बीती घटनाओं के पूरे ब्योरेवर वर्णन- वे अत्यन्त सहृदयता से व्यक्त करती हैं । प्राणि-मात्र के प्रति महादेवी के मन में गहरी सहानुभूति थी । अत: उनकी रचनाओं में प्रेम, पीड़ा, विश्व-वेदना और करुणा की सहज स्वाभाविक अभिव्यक्ति पायी जाती है । इस निबंध में एक गिलहरी जैसे छोटे जीव की जीवन शैली का वर्णन करते हुए महादेवी ने प्राणि-मात्र के प्रति अपने प्रेम, करुणा तथा हृदय की संवेदनशीलता से पाठकों को सराबोर कर दिया है ।

महादेवी की भाषा अत्यन्त सरल, सजीव होने के साथ-साथ चित्र और प्रतीकों से पूर्ण होने के कारण सीधे असर करती है । बीच-बीच में संस्कृत के दो-एक शब्द मोतियों की भांति चमकते और भावों को जगमगा देते हैं । इसलिए ऐसे लेखों को बार-बार पढ़ने की इच्छा होती है । इनमें कहानी का-सा मजा आता है ।

गिल्लू

सोनजुही में आज एक पीली कली लगी है । इसे देखकर अनायास ही उस छोटे जीव का स्मरण हो आया, जो इस लता की सघन हरीतिमा में छिपकर बैठता था और फिर मेरे निकट पहुँचते ही कंधे पर कूदकर मुझे चौंका देता था । तब मुझे कली की खोज रहती थी, पर आज उस लघुप्राण की खोज है ।

परंतु वह तो अब तक इस सोनजुही की जड़ में मिट्टी होकर मिल गया होगा । कौन जाने स्वर्णिम कली के बहाने वही मुझे चौंकाने ऊपर आ गया हो !

अचानक एक दिन सवेरे कमरे से बरामदे में आकर मैंने देखा, दो कौवे एक गमले के चारों ओर चोंचों से छूआ-छुऔवल जैसा खेल खेल रहे हैं । यह काक भुशुंडि भी विचित्र पक्षी है– एक साथ समादरित, अनादरित, अति सम्मानित, अति अवमानित ।

हमारे बेचारे पुरखे न गरुड़ के रूप में आ सकते हैं, न मयूर के, न हंस के । उन्हें पितरपक्ष में हमसे कुछ पाने के लिए काक बनकर ही अवतीर्ण होना पड़ता है । इतना ही नहीं। हमारे दूरस्थ प्रियजनों को भी अपने आने का मधु संदेश इनके कर्कश स्वर में ही देना पड़ता है । दूसरी ओर हम कौवा और काँव-काँव करने को अवमानना के अर्थ में ही प्रयुक्त करते हैं ।

मेरे काकपुराण के विवेचन में अचानक बाधा आ पड़ी, क्योंकि गमले और दीवार की संधि में छिपे एक छोटे-से जीव पर मेरी दृष्टि रुक गई । निकट जाकर देखा, गिलहरी का छोटा-सा बच्चा है जो संभवत: घोंसले से गिर पड़ा है और अब कौवे जिसमें सुलभ आहार खोज रहे हैं ।

काकद्वय की चोंचो के दो घाव उस लघुप्राण के लिए बहुत थे, अत: वह निश्चेष्ट -सा गमले से चिपटा पड़ा था ।

सबने कहा, कौवे की चोंच का घाव लगने के बाद यह बच नहीं सकता, अतः इसे ऐसे ही रहने दिया जाए ।

परंतु मन नहीं माना– उसे हौले से उठाकर अपने कमरे में लाई, फिर रुई से रक्त पोंछकर घावों पर पेंसिलिन का मरहम लगाया ।

रुई की पतली बत्ती दूध से भिगोकर जैसे-जैसे उसके नन्हे से मुँह में लगाई पर मुँह खुल न सका और दूध की बूँदें दोनों ओर ढुलक गईं।

कई घंटे के उपचार के उपरांत उसके मुँह में एक बूँद पानी टपकाया जा सका । तीसरे दिन वह इतना अच्छा और आश्वस्त हो गया कि मेरी उँगली अपने दो नन्हे पंजों से पकड़कर, नीले काँच के मोतियों जैसी आँखों से इधर-उधर देखने लगा ।

तीन-चार मास में उसके स्निग्ध रोएँ, झब्बेदार पूँछ और चंचल चमकीली आँखें सबको विस्मित करने लगीं ।

हमने उसकी जातिवाचक संज्ञा को व्यक्तिवाचक का रूप दे दिया और इस प्रकार हम उसे गिल्लू कहकर बुलाने लगे । मैंने फूल रखने की एक हलकी डलिया में रुई बिछाकर उसे तार से खिड़की पर लटका दिया ।

वही दो वर्ष गिल्लू का घर रहा । वह स्वयं हिलाकर अपने घर में झूलता और अपनी काँच के मनकों-सी आँखों से कमरे के भीतर और खिड़की से बाहर न जाने क्या देखता-समझता रहता था । परंतु उसकी समझदारी और कार्यकलाप पर सबको आश्चर्य होता था ।

जब मैं लिखने बैठती तब अपनी ओर मेरा ध्यान आकर्षित करने की उसे इतनी तीव्र इच्छा होती थी कि उसने एक अच्छा उपाय खोज निकाला ।

वह मेरे पैर तक आकर सर्र से परदे पर चढ़ जाता और फिर उसी तेजी से उतरता । उसका यह दौड़ने का क्रम तब तक चलता जब तक मैं उसे पकड़ने के लिए न उठती ।

कभी मैं गिल्लू को पकड़कर एक लंबे लिफाफे में इस प्रकार रख देती कि उसके अगले दो पंजों और सिर के अतिरिक्त सारा लघुगात लिफाफे के भीतर बंद रहता । इस

अद्‌भुत स्थिति में कभी-कभी घटों मेज पर दीवार के सहारे खड़ा रहकर वह अपनी चमकीली आँखों से मेरा कार्यकलाप देखा करता ।

भूख लगने पर चिक-चिक करके मानो वह मुझे सूचना देता और काजू या बिस्कुट मिल जाने पर उसी स्थिति में लिफाफे से बाहर वाले पंजों से पकड़कर उसे कुतरता ।

फिर गिल्लू के जीवन का प्रथम बसंत आया । नीम-चमेली की गंध मेरे कमरे में हौले-हौले आने लगी । बाहर की गिलहरियाँ खिड़की की जाली के पास आकर चिक-चिक करके न जाने क्या कहने लगीं ?

गिल्लू को जाली के पास बैठकर अपनेपन से बाहर झाँकते देखकर मुझे लगा कि इसे मुक्त करना आवश्यक है ।

मैंने कीलें निकालकर जाली का एक कोना खोल दिया और इस मार्ग से गिल्लू ने बाहर जाने पर सचमुच ही मुक्ति की साँस ली । इतने छोटे जीव को घर में पले कुत्ते, बिल्लियों से बचाना भी एक समस्या ही थी ।

आवश्यक कागज-पत्रों के कारण मेरे बाहर जाने पर कमरा बंद ही रहता है । मेरे कॉलेज से लौटने पर जैसे ही कमरा खोला गया और मैंने भीतर पैर रखा, वैसे ही गिल्लू अपने जाली के द्वार से भीतर आकर मेरे पैर से सिर और सिर से पैर तक दौड़ लगाने लगा । तब से यह नित्य का क्रम हो गया ।

मेरे कमरे से बाहर जाने पर गिल्लू भी खिड़की की खुली जाली की राह बाहर चला जाता और दिन भर गिलहरियों के झुंड का नेता बना हर डाल पर उछलता-कूदता रहता और ठीक चार बजे वह खिड़की से भीतर आकर अपने झूले में झूलने लगता ।

मुझे चौंकाने की इच्छा उसमें न जाने कब और कैसे उत्पन्न हो गई थी । कभी फूलदान के फूलों में छिप जाता, कभी परदे की चुन्नट में और कभी सोनजुही की पत्तियों में ।

मेरे पास बहुत-से पशु-पक्षी हैं और उनका मुझसे लगाव भी कम नहीं है, परंतु उनमें से किसी को मेरे साथ मेरी थाली में खाने की हिम्मत हुई है, ऐसा मुझे स्मरण नहीं आता ।

गिल्लू उनमें अपवाद था। मैं जैसे ही खाने के कमरे में पहुँचती, वह खिड़की से निकलकर आँगन की दीवार बरामदा पार करके मेज पर पहुँच जाता और मेरी थाली में बैठ जाना चाहता । बड़ी कठिनाई से मैंने उसे थाली के पास बैठना सिखाया जहाँ बैठकर वह मेरी थाली में से एक-एक चावल उठाकर बड़ी सफाई से खाता रहता । काजू उसका प्रिय खाद्य था और कई दिन काजू न मिलने पर वह अन्य खाने की चीजें या तो लेना बंद कर देता या झूले से नीचे फेंक देता था ।

उसी बीच मुझे मोटर दुर्घटना में आहत होकर कुछ दिन अस्पताल में रहना पड़ा । उन दिनों जब मेरे कमरे का दरवाजा खोला जाता गिल्लू अपने झूले से उतरकर दौड़ता और फिर किसी दूसरे को देखकर उसी तेजी से अपने घोंसले में जा बैठता । सब उसे काजू दे आते, परंतु अस्पताल से लौटकर जब मैंने उसके झूले की सफाई की तो उसमें काजू भरे मिले, जिनसे ज्ञात होता था कि वह उन दिनों अपना प्रिय खाद्य कितना कम खाता रहा ।

मेरी अस्वस्थता में वह तकिए पर सिरहाने बैठकर नन्हे-नन्हे पंजों से मेरे सिर और बालों को इतने हौले-हौले सहलाता रहता कि उसका हटना एक परिचारिका के हटने के समान लगता ।

गरमियों में जब मैं दोपहर मैं काम करती रहती तो गिल्लू न बाहर जाता न अपने झूले में बैठता । उसने मेरे निकट रहने के साथ गरमी से बचने का एक सर्वथा नया उपाय खोज निकाला था । वह मेरे पास रखी सुराही पर लेट जाता और इस प्रकार समीप भी रहता और ठंडक में भी रहता ।

गिलहरियों के जीवन की अवधि दो वर्ष से अधिक नहीं होती, अत: गिल्लू की जीवन यात्रा का अंत आ ही गया । दिन भर उसने न कुछ खाया न बाहर गया । रात में अंत की यातना में भी वह अपने झूले से उतरकर मेरे बिस्तर पर आया और ठंडे पंजों से मेरी वही उँगली पकड़कर हाथ से चिपक गया, जिसे उसने अपने बचपन की मरणासन्न स्थिति में पकड़ा था ।

पंजे इतने ठंडे हो रहे थे कि मैंने जागकर हीटर जलाया और उसे उष्णता देने का प्रयत्न किया । परंतु प्रभात की प्रथम किरण के स्पर्श के साथ ही वह किसी और जीवन में जागने के लिए सो गया ।

उसका झूला उतारकर रख दिया गया है और खिड़की की जाली बंद कर दी गई है, परंतु गिलहरियों की नयी पीढ़ी जाली के उस पार चिक-चिक करती ही रहती है और सोनजुही पर बसंत आता ही रहता है ।

सोनजुही की लता के नीचे गिल्लू को समाधि दी गई है – इसलिए भी कि उसे वह लता सबसे अधिक प्रिय थी – इसलिए भी कि उस लघुगात का, किसी वासंती दिन, जुही के पीताभ छोटे फूल में खिल जाने का विश्वास, मुझे संतोष देता है ।

●

शब्दार्थ :

गिल्लू – गिलहरी; गिलाई, चेखुरा, चूहे की तरह की मोटी रोएंदार पूँछ का छोटा जीव जो पेड़ों पर रहता है । काक भुशुण्डि – एक ब्राह्मण जो लोमश मुनि के शाप से कौआ हो गये थे और प्रभु श्रीराम के बड़े भक्त थे । अवमानित – अपमानित । पितरपक्ष – कुआँर की कृष्ण प्रतिपदा से अमावास्या तक का समय जब मृत पूर्व पुरुषों के नाम पर श्राद्ध आदि किया जाता है । चमेली – चंपक बेलि पुष्प । कीलें – काँटा, खूँटी । सिरहाने – चारपाई में सिर की ओर का भाग । वासंती – मदनोत्सव, वसंत-संबंधी । सोनजुही – एक प्रकार का पीला फूल । अनायास – आसानी से । हरीतिमा – हरियाली । लघुप्राण – छोटा जीव । छूआ – छुऔवल – छूने– छिपनेका खेल । समादरित – विशेष आदर । अनादरित – आदर का अभाव, तिरस्कार । अवतीर्ण – प्रकट । कर्कश – कटु, कानों को न भानेवाला । काकद्वय – दो कौए । निश्चेष्ट – बिना किसी चेष्टा या हरकत के । आश्वस्त– निश्चित । स्निग्ध – चिकना । विस्मित – आश्चर्यचकित । लघु गात – छोटा शरीर । अपवाद – सामान्य नियम को बाधित या मर्यादित करनेवाला । घोंसला – नीड़ । परिचारिका – सेविका । मरणासन्न – जिसकी मृत्यु निकट हो । उष्णता – गरमी । पीताभ – पीले रंग का ।

प्रश्न और अभ्यास

1. **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दो-तीन वाक्यों में दीजिए :**

(क) सोनजुही में लगी पीली कली को देखकर लेखिका के मन में कौन-से विचार उमड़ने लगे ?

(ख) गिलहरी के घायल बच्चे का उपचार किस प्रकार किया गया ?

(ग) लेखिका का ध्यान आकर्षित करने के लिए गिल्लू क्या करता था ?

(घ) गिल्लू का कार्य-कलाप कैसा था ?

(ङ) लेखिका को क्यों ऐसा लगा कि गिल्लू को मुक्त करना आवश्यक है ?

(च) लेखिका की अस्वस्थता में गिल्लू क्या करता था ?

(छ) गरमी से बचने का कौन-सा उपाय गिल्लू ने खोज निकाला था ?

(ज) गिल्लू की किन चेष्टाओं से लेखिका को लगा कि अब उसका अंत समय समीप है ?

(झ) सोनजुही की लता के नीचे बनी गिल्लू की समाधि से लेखिका के मन में किस विश्वास का जन्म होता है ?

(ञ) लेखिका को उस लघुप्राण गिल्लू की खोज क्यों थी ?

2. **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्यों में दीजिए :**

(क) किसे देखकर लेखिका को गिल्लू का स्मरण हो आया ?

(ख) गिल्लू लेखिका को कैसे चौंका देता था ?

(ग) सोनजुही की स्वर्णिम कली को देखकर लेखिका को क्या लगा ?

(घ) कौवे को कब सम्मानित किया जाता है ?

(ङ) लघुप्राण क्यों निश्चेष्ट-सा गमले में चिपटा पड़ा था ?

(च) भूख लगने पर गिल्लू क्या करता था ?

(छ) गिल्लू का नित्य का क्रम कैसा था ?

(ज) लेखिका की अस्वस्थता के समय गिल्लू का हटना क्यों एक परिचारिका के हटनेके समान लगता था ?

(झ) गिल्लू की जीवन-यात्रा का अंत क्यों आ गया ?

(ञ) कौन-से स्पर्श के साथ ही गिल्लू किसी और जीवन में जागने के लिए सो गया ?

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-एक शब्द में दीजिए :

(क) लघुप्राण किसे कहा गया है ?

(ख) दो कौवे कैसा खेल खेल रहे थे ?

(ग) गिल्लू के जीवन में प्रथम बसंत आने पर क्या प्रभाव पड़ा ?

(घ) गिल्लू किसका नेता बनकर हर डाल पर उच्छलता-कूदता रहता था ?

(ङ) किसके पास बहुत- से पशु-पक्षी हैं ?

(च) गिल्लू का प्रिय खाद्य कौन-सा था ?

(छ) लेखिका की अस्वस्थता में गिल्लू कहाँ बैठता था ?

(ज) गिलहरियों के जीवन की अवधि कितने वर्ष से अधिक नहीं होती ?

(झ) गिल्लू ने कैसी स्थिति में लेखिका की उँगली को पकड़ा था ?

(ञ) गिल्लू को कहाँ समाधि दी गयी ?

4. **निम्नलिखित अवतरणों के अर्थ स्पष्ट कीजिए :**

(क) तब मुझे कली की खोज रहती थी, पर आज उस लघुप्राण की खोज है ।

(ख) यह काक भुशुण्डि भी विचित्र पक्षी है – एक साथ समादरित, अनादरित, अति सम्मानित, अति अवमानित ।

(ग) उसका हटना एक परिचारिका के हटनेके समान लगता ।

(घ) प्रभात की प्रथम किरण के स्पर्श के साथ ही वह किसी और जीवन में जागने के लिए सो गया ।

(ङ) उस लघुगात का, किसी वासंती दिन, जुही के पीताभ छोटे फूल में खिल जाने का विश्वास, मुझे सन्तोष देता है ।

5. **रिक्त स्थानों को भरिए :**

(क) कौन जाने ________ के बहाने वही मुझे चौंकाने ऊपर आ गया हो ।

(ख) ________ की गंध मेरे कमरे में हौले-हौले आने लगी ।

(ग) हमने उसकी ________ संज्ञा को व्यक्तिवाचक का रूप दे दिया ।

(घ) जिसे उसने बचपन की ________ स्थिति में पकड़ा था ।

(ङ) ________ छोटे फूल में खिल जानेका विश्वास मुझे सन्तोष देता है ।

6. **निम्नलिखित प्रश्नों के सही उत्तर दिये गये विकल्पों से दीजिए :**

(क) दो कौवे कैसा खेल खेल रहे थे ?

(i) दौड़ लगानेका (ii) छूआ - छुऔवल (iii) खाना खाने का (iv) गेंद

(ख) लेखिका के किस विवेचन में अचानक बाधा आ पड़ी ?

(i) शिव पुराण (ii) काक पुराण (iii) सूर्य पुराण (iv) नृसिंह पुराण

(ग) लेखिका के कमरे में किसकी गंध हौले-हौले आने लगी ?

(i) सोनजुही (ii) बसंत (iii) नीम-चमेली (iv) गुलाब

(घ) गिल्लू का कौन-सा खाद्य प्रिय खाद्य था ?

(i) चावल (ii) बिस्कुट (iii) केला (iv) काजू

(ङ) गिलहरियों के जीवन की अवधि कितने वर्ष से अधिक नहीं होती ?

(i) एक (ii) दो (iii) तीन (iv) चार

भाषा-ज्ञान

1. प्रस्तुत पाठ में आये हुए निम्नलिखित शब्दों पर ध्यान दीजिए :

स्वर्णिम, समादरित, अपनापन, लगाव, परिचारक, झूला ।

– ये शब्द कुछ प्रत्ययों के मेल से बने हैं जो इस प्रकार हैं–

स्वर्णिम	=	स्वर्ण + इम	समादरित	=	समादर + इत
अपनापन	=	अपना + पन	लगलव	=	लगना + आव
परिचारिक	=	परिचार + इक	झूला	=	झूलना + आ

इन शब्दों के अंत में लगनेवाले शब्दांश प्रत्यय हैं । **जो शब्दांश धातु, क्रिया या शब्दों के अंत में लग कर नये शब्दों का निर्माण करते हैं, उन्हें प्रत्यय कहते हैं ।** प्रत्यय दो प्रकार के होते हैं – कृत् प्रत्यय और तद्धित प्रत्यय । धातु या क्रिया के अंत में लगनेवाले प्रत्यय कृत् प्रत्यय कहे जाते हैं और उनके मेल से बने शब्द को कृदन्त पद कहा जाता है । संज्ञा, सर्वनाम या विशेषण के बाद लगनेवाले प्रत्यय को तद्धित प्रत्यय और इनके मेल से बने शब्द को तद्धितान्त पद कहा जाता है ।

2. पाठ में आये इन शब्दों पर ध्यान दीजिए :

– नीम-चमेली, दोपहर, जीवन-यात्रा, मरणासन्न ।

– इन शब्दों को समास कहा जाता है । **परस्पर संबंध रखनेवाले दो या दो से अधिक शब्दों के मेल को समास कहा जाता है ।**

जैसे – नीम और चमेली = नीम-चमेली

दो पहरों का समूह = दोपहर

जीवन की यात्रा = जीवन-यात्रा

मरण को आसन्न (पहुँचा हुआ) = मरणासन्न

–ये शब्द क्रमशः द्वन्द्व समास, द्विगु समास एवं संबंध तत्पुरुष तथा कर्म तत्पुरुष समास के उदाहरण हैं ।

3. **किसी भी प्राणी, पदार्थ, स्थान, गुण आदि का बोध करानेवाले शब्द को संज्ञा कहा जाता है । इसके पांच भेद हैं :**

(क) व्यक्तिवाचक संज्ञा (ख) जातिवाचक संज्ञा

(ग) भाववाचक संज्ञा (घ) समुदायवाचक संज्ञा

(ङ) द्रव्यवाचक संज्ञा

निम्न पंक्तियों में रेखांकित किये गये संज्ञा-शब्दों का भेद बताइए :

(क) सोनजुही की लता के नीचे गिल्लू को समाधि दी गयी है ।

(ख) गिलहरियों के जीवन की अवधि दो वर्ष से अधिक नहीं होती ।

(ग) उनका मुझसे लगाव भी कम नहीं है ।

(घ) नीम-चमेली की गंध मेरे कमरे में आने लगी ।

(ङ) दिनोंदिन सोने का भाव बढ़ता जा रहा है ।

(च) गिल्लू गिलहरियों के झुंड का नेता था ।

4. कोष्ठक में दिये गये शब्दों की भाववाचक संखाएँ बनाकर रिक्त स्थान भरिए :

(क) कभी किसी की ________ नहीं करनी चाहिए । (बुरा)

(ख) परिश्रम करने पर ________ मिलती है । (सफल)

(ग) बुजुर्ग की ________ से हम मुग्ध हो गये । (सज्जन)

(घ) प्रत्येक मनुष्य को अपने ________ का ध्यान रखना चाहिए । (स्वस्थ)

5. विशेषण के साथ सही संज्ञा शब्द को मिलाइए :

पीली – प्रियजन	नीले – कली	सघन – आँखें
झब्बेदार – बत्ती	दूरस्थ – हरीतिमा	चमकीली – रोएँ
स्निग्ध – पूँछ	मधु – स्वर	पतली – काँच
		कर्कश – सन्देश

6. निम्नलिखित शब्दों का विलोम / विपरीत शब्द लिखिए :

जीवन	________________	प्रभात	________________
विश्वास	________________	सन्तोष	________________
आवश्यक	________________	अपनापन	________________

7. निम्नलिखित वाक्यों में उचित परसर्ग शब्द भरिए :

(i) वह मेरे पैर तक आकर परदे __________ चढ़ जाता ।

(ii) सारा लघुगात लिफाफे __________ बन्द रहता ।

(iii) इस मार्ग __________ गिल्लू ने मुक्ति की सांस ली।

(iv) नीम - चमेली की गंध मेरे कमरे __________ आने लगी।

(v) फिर गिल्लू __________ जीवन का प्रथम बसंत आया।

8. उदाहरण के अनुसार निम्नलिखित वाक्यों को कर्मवाच्य में बदल कर लिखिए :

उदाहरण : महादेवी ने गिल्लू के घावों पर पेंसिलिन का मरहम लगाया।

कर्मवाच्य में – महादेवी के द्वारा गिल्लू के घावों पर पैंसिलिन का मरहम लगाया गया।

(क) उसने एक अच्छा उपाय खोज निकाला। ....

(ख) मैंने उसे थाली के पास बैठना सिखाया। ....

(ग) महादेवी ने उसे तार से खिड़की पर लटका दिया। ....

(घ) हम उसे गिल्लू कहकर बुलाने लगे। ....

(ङ) गिल्लू ने मुक्ति की साँस ली। ....

9. वचन बदलिए :

कली	__________	आँख	__________
कौवा	__________	गिलहरी	__________
पक्षी	__________	झूला	__________
गमला	__________	हंस	__________

10. लिंग स्पष्ट कीजिए :

भूख	__________	पानी	__________
गंध	__________	झुण्ड	__________

दौड़ ________________ जीवन ________________

पूँछ ________________ पीढ़ी ________________

11. निम्नलिखित शब्दों के पर्यायवाची रूप लिखिए :

दीवार ________________ जीवन ________________

पुरखे ________________ प्रयत्न ________________

आँख ________________ आवश्यक ________________

प्रभात ________________ घर ________________

अभ्यास - कार्य

1. निम्नलिखित शब्दों को पाँच-पाँच बार लिखिए :

स्वर्णिम ____________ ____________ ____________ ____________

निश्चेष्ट ____________ ____________ ____________ ____________

स्निग्ध ____________ ____________ ____________ ____________

हरीतिमा ____________ ____________ ____________ ____________

आश्वस्त ____________ ____________ ____________ ____________

2. क्रिया-शब्द से प्रत्यय - ना हटानेसे क्रियार्थक संज्ञा-शब्द बनता है ।

जैसे :- दौड़ना – दौड़ उछलना-कूदना – उछल-कूद सोचना – सोच

पकड़ना – पकड़ पहुँचना – पहुँच माँगना – माँग

3. हिन्दी में अनुस्वार और चन्द्रविन्दु के प्रयोग तथा उच्चारण पर ध्यान दीजिए :

हंस – अनुस्वार, व्यंजन का उच्चारण

साँस – चन्द्रविन्दु, अनुनासिक स्वर का उच्चारण

निम्नलिखित शब्दों का सही उच्चारण कीजिए :

अनुस्वार – संधि, चोंच, पंजा, बसंत, झुंड, घोंसला, ठंडक, अंत ।

अनुनासिक स्वर – काँव – काँव, पहुँचना, बूँद, मुँह, उँगली, काँच, झाँकना, आँगन ।

4. अर्थ देखिए और समझिए :

के निकट – के पास, के समीप

के बहाने – के कारण

के अतिरिक्त – के बिना

इस तरह के शब्द प्रस्तुत पाठ से छाँटिए ।

■ ■ ■

जननी जन्मभूमि

संकलित

विचार-बोध :

यह निबंध हमारी जन्मभूमि ओड़िशा (उत्कल, कलिंग, कोशल आदि) के बारे में काफी जानकारी देता है । कलिंग के लोग बड़े बीर और साहसी होते थे । कलिंग की सेना ने सम्राट अशोक की सेना के साथ मुकाबला किया । बहुत लोग मारे गए । मध्यकाल में ओड़िशा के गजपति राजाओं ने गंगा से गोदावरी तक अपना राज्य फैलाया था । आज वह गौरव अतीत में डूब गया है । उत्कल भूमि मंदिर मूर्त्तियाँ बनाने की कला में मशहूर थी । यहाँ की चित्रकला तथा अन्य शिल्प कला देश-विदेश में प्रख्यात थी ।

आड़िशा का वर्त्तमान फिरसे उत्साहजनक हुआ । स्वतंत्रता के बाद यहाँ अनेक छोटे बड़े उद्योग तथा कारखानें स्थापित हुए । कई बंदरगाहों की स्थापना हुई है । यह प्रांत आज प्रगति के पथ पर चल रहा है ।

जननी जन्मभूमि

यह दुनिया बड़ी अजीब है । क्या-क्या नहीं है इसमें । बड़े-बड़े पहाड़ हैं । घने जंगल हैं । कलकल करती नदियाँ बहती हैं । झरने झरते हैं । सागर गरजते हैं । किस्म-किस्म के पेड़-पौधे, पशु-पक्षी, नर-नारी हैं । भला है तो बुरा भी है । तुलसीदास कहते हैं – ‘जड़ चेतन गुन दोषमय बिस्व कीन्ह करतार ।’ यहाँ जड़-चेतन, चर-अचर सब हैं । यह विविधता का भंडार है । अच्छे लोग अच्छाई को चुनते हैं, जैसे हंस दूध पी लेता है, और पानी छोड़ देता है ।

संसार हर पल बदलता भी रहता है । ऋतुएँ बदलती हैं । मौसम कभी सुहावना होता है तो कभी डरावना । कभी जानलेवा गर्मी तो कभी कड़ाके की सर्दी । जहाँ हरीभरी फसल नाचती है, वहाँ अकाल भी पड़ता है । आदमी कभी सुख-चैन से जीता है तो कभी दु:खी होता है । कहीं अमीरी है तो कहीं गरीबी । अच्छे दिन जल्दी उड़ जाते हैं । बुरे दिन हौले-हौले सरकते हैं । लोग कहते हैं यह जिंदगी भी क्या है ? चार दिन की चाँदनी फिर अँधेरी रात।

यह मनुष्य भी अजीब प्राणी है । वह अँधेरी रात से डरता नहीं, लड़ता है । वह हर दु:ख को झेलता है, हर दर्द को सहता है । चार दिन की चाँदनी की तलाश में उन चंद दिनों के सुख के लिए, प्रकृति से भी लड़ता है । उस पर कब्जा जमाना चाहता है । क्योंकि आशा से ही आकाश थमा है । मनुष्य की यह अदम्य जिज्ञाषा नया-नया इतिहास रचती है । यह उसके उत्थान और पतन की कहानी है ।

इसलिए हर आदमी का हर समाज का, हर देश या प्रदेश का अलग इतिहास होता है । उसमें उसकी आशा-आकांक्षा, खुशी-गम का, सफलता-विफलता का, आलस्य और चौकसी का लेखाजोखा रहता है ? आइए, अपनी जन्मभूमि ओड़िशा के इतिहास के एक-दो पन्ने पढ़ें ।

ओड्र देश या ओड़िशा के कई नाम मिलते हैं । कलिंग, उत्कल, कंगोद और कोशल । एक-एक नाम शायद किसी अंचल या काल में ज्यादा प्रिय हुए हैं ।

इस इतिहास का पहला पन्ना है ईस्वी पूर्व तीसरी शताब्दी का । लिखा है – कलिंगा: साहसिका: । क्योंकि कलिंग के सैनिकों ने विशाल मगध-सेना के दाँत खट्टे कर दिए । सम्राट अशोक का डटकर मुकाबला किया । जानें दीं, जमीन नहीं दी । लाख की तादाद में मरे, लाख बन्दी बने । दया नामकी नदी में रक्त की धारा बह चली । न राजा का नाम पता है, न सेनापति का । लेकिन प्रचण्ड अशोक भी घबरा गया । वह धर्माशोक बन गया । युद्ध छोड़ दिया । तलवार फेंक दी । मानव-प्रेम और अहिंसा की नीति अपनाई । धौली के अशोकीय

शिलालेख उसका बयान करते हैं । पहाड़ी पर जापानियों के हाथों बना नया बैद्धस्तूप उस गौरवशाली घटना की उद्घोषणा करता है । वीरत्व की यह कहानी आगे बढ़ती है । कलिंग सम्राट खारबेल मगध पर आक्रमण कर देते हैं । उसे पराजित करके 'कलिंग जिन' को वापस ले आते हैं । खण्डगिरि - उदयगिरि के शिलालेख और गुफाएँ खारबेल का यशोगान करती हैं । कलिंग के शौर्य की यह अमर कथा है ।

साहसिकता का यह सिलसिला आधुनिक युग में फिर दिखाई देता है । बक्सि जगबन्धु, सुरेन्द्र साय, चाखि खुण्टिया, चक्रधर बिसोई, लक्ष्मण नायक जैसे साहसी कलिंग के सपूतों ने अंग्रेजों को भी चैन की सांस नहीं लेने दिया था । इन लोगों ने प्राण दे दिये, मगर अन्याय नहीं सहा ।

इतिहास का अब दूसरा पन्ना देखें । उत्कृष्ट कलाओं का देश उत्कल । सदियाँ बीत गई । मगर भुवनेश्वर, पुरी और कोणार्क के बड़े-बड़े मंदिर आज भी सिर उठाये खड़े हैं । दुनिया के ये अजूबे हैं । भव्य और विशाल स्थापत्य अनेक छोटे-बड़े मंदिर ! हजारों नारी मूर्तियाँ । विभिन्न चेष्टाओं और भंगिमाओं से मुग्ध करनेवाली । हाथी, घोड़े, पहिये, कमल, रथाकार मंदिर ! विशाल और मनोहर ! नृत्य-गान के माहौल ! द्वारपाल, दिक्पालों के पौरुष । ये सब देशी-विदेशी पर्यटकों के लिए जादू के नमूने हैं । ओड़िशा के सूती और पाट के वस्त्र, सोने-चाँदी के गहने, काँसे-पीतल के बर्तन, सींग की कलाकृतियाँ विदेशी बाजार के आकर्षण रही हैं । ओड़िशी चित्रकला, नृत्य और संगीत आज विदेशों में अत्यंत लोकप्रिय हैं । ओड़िआ साधव (बनिये) छोटे-बड़े नावों में सुदूर पूर्वी द्वीपों में व्यापार का जाल फैलाये हुए थे । महासमुद्र की तरंगमालाओं में नाच-नाच कर जाते और धनरत्नों से नौकाएँ भर भर कर घर लौटते थे । न तूफान से डरते थे न गहरे सागर से । वे कहते थे – 'आ का मा भै'! हमें किसीका डर नहीं । चिलिका झील तो उत्कल-लक्ष्मी की विलास सरोवर रही । लेकिन दीपक जलता है तो बुझता भी है । ओड़िशा के ऐसे, शैर्य, ऐश्वर्य, और वैभव सब

काल के गर्भ में विलीन हो गए । ओड़िशा का सारा कार्यकलाप इतिहास बन गया । उसका पतन हो गया ।

बीसवीं शती के आंरभ में महापुरुष मधुसूदन ने इस इतिहास को पढ़ा । उनका दिल भर आया । उन्होंने सोते को जगाया । बोले – 'है उत्कल के सपूतो ! उठो, जागो ! अपने पुराने गौरव को याद करो ! तुम्हारे पूर्वजों ने गांगा से गोदावरी तक अपना राज्य फैलाया था । वह टूट-बिखर गया । ''गजपति गौड़ेश्वर नव कोटि कर्णाट कलर्वर्गेश्वर'' की उपाधि झूठी हो गई । तुम दाने दाने के मोहताज हो गए । अब तो उठो ! करो या मरो ।''

ओड़िशावासियों ने यह पुकार सुनी । अप्रैल १९३६ को स्वतंत्र ओड़िशा प्रदेश बना । अनेक सुधी नेता काम में जुट गए । नवनिर्माण का बीड़ा उठाया । उत्कल विश्वविद्यालय स्थापित हुआ । अनेक स्कूल-कॉलेज खुले । नई और तकनीकी शिक्षा का इंतजाम हुआ । इंजीनियरिंग और मेडिकल कॉलेज खुले । कुछ ही वर्षों में हजारों अमले-ऑफिसर, शिक्षक-अध्यापक, इंजीनियर और डॉक्टर तैयार हो गए । इन योग्य व्यक्तियों ने अपने तथा बाहर के प्रांतों में काम करके नाम कमाया । हीराकुद बाँध बना । खेतों की सिंचाई हुई । अनाज का पैदावार बढ़ा । राउरकेला से लोहे का उत्पादन होने लगा । सुनाबेड़ा में हवाई जहाज बनने लगे । पराद्वीप बंदरगाह ने नौवाणिज्य को बढ़ावा दिया । इमफा, नालको, जिन्दल और वेदान्त जैसे बड़ी-बड़ी कंपनियों ने धातु-द्रव्यों का उत्पादन किया । चाँदीपुर और बडमाल में देश के लिए आधुनिक रक्षा-सामग्री बनने लगी । आजकाल तो ओड़िशा में ही सारी आधुनिक सुविधाएँ मिलने लगी हैं ।

सदियों बाद फिर ओड़िशा की किस्मत पलटी है । वह प्रगति के रास्ते पर आया है । दूसरे राज्यों के साथ कदम से कदम मिलाकर चल रहा है । देश की प्रगति में भी उसका योगदान बढ़ा है । यह उसके उत्थान के लक्षण हैं । हम सबको इससे लाभ उठाना चाहिए । नये उद्यमों में भागेदारी होनी चाहिए । तब ओड़िशा का नया इतिहास बन सकेगा ।

●

शब्दार्थ :

निराला – विचित्र, स्थावर – स्थिर रहनेवाले, जंगम – चलने-फिरनेवाले, जड़ – लकड़ी पत्थर जैसी वस्तुएँ, चेतन – जीव, सुहावना – सुखकर, फकीरी – गरीबी, खुशहाली – सुख का वक्त, बदहाली – बुरा समय, गम – दु:ख, पन्ना – पृष्ठ, सिलसिला – कड़ी, अजूबा – आश्चर्य-वस्तु, झील – बड़ा जलाशय, शौर्य – वीरत्व, आखिरकार – अंत में, सपूत – सुपुत्र ।

अर्थ विस्तार :

हंसका विवेक – गुणको ग्रहण करना और दोष को छोड़ना

चार...रात – कुछ दिन सुख के फिर दु:ख । यह कहावत है ।

दिल दहलना – डर जाना

कलिंग जिन – वह मूल्यवान वस्तु जो मगध से लायी गयी थी ।

आ का मा भै – ओड़िशा के बनिये समुंदर में बोहित छोड़ते वक्त यह नारा देते हैं ।

विलास सरोवर – लक्ष्मीजी के विलास का जलाशय अर्थात् चिलिका व्यापार का केन्द्र था, जहाँ धनरत्न आते थे ।

प्रश्न और अभ्यास

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग दो-तीन वाक्यों में दीजिए :

(क) इस दुनिया को विचित्रा क्यों कहा जाएगा ?

(ख) दुनिया बदलती है, इसके क्या प्रमाण हैं ?

(ग) कलिंगा: साहसिका: – ऐसा क्यों कहा गया है ?

(घ) धर्माशोक ने क्या किया ?

(ङ) वीरत्व की कहानी आगे कैसे बढ़ी ?

(च) धउली के शिलालेख में क्या लिखा है ?

(छ) ‘उत्कल’ का क्या अर्थ है ?

(ज) ओड़िशा के मंदिर अजूबे क्यों हैं ?

(झ) ओड़िशा के बनिये क्या करते थे ?

(ञ) मधुसूदन ने क्या किया ?

(ट) मधुबाबू की पुकार सुनकर क्या हुआ ?

(ठ) ओड़िशा ने कैसे प्रगति की ?

(ड) ओड़िशा आज पीछे नहीं है, क्या प्रमाण है ?

(ढ) आजकल क्या-क्या नए उद्योग हो रहे हैं ?

2. इन प्रश्नों के उत्तर एक-दो वाक्यों में दीजिए :

(क) संसार निराला क्यों है ?

(ख) संसार बदलता है, इसके क्या प्रमाण हैं ?

(ग) आदमी के जीवन का क्या इतिहास है ?

(घ) कलिंग की ख्याति क्यों बढी ?

(ङ) धउली के शिलालेख क्या कहते हैं ?

(च) बक्सि जगबंधु आदि ने क्या किया ?

(छ) कौन-सी मूर्तियाँ दुर्लभ हैं ?

(ज) चिलिका की क्या खासियत है ?

(झ) मधुसूदन ने क्या किया ?

(ञ) ओड़िशावासियों ने मधुसूदन की पुकार सुनकर क्या-क्या किया ?

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-एक वाक्य में दीजिए ।

(क) नीर क्षीर का विवेक किसके पास है ?

(ख) आज सुहाना मौसम है तो कल कैसा हो जाता है ?

(ग) आदमी के जीवन का इतिहास क्या है ?

(घ) प्रदेश के इतिहास में क्या-क्या होता है ?

(ङ) कलिंगवासी किसके नेतृत्व में लड़े ?

(च) अशोक ने कौन सी नीति अपनाई ।

(छ) खण्डगिरी की गुफाएँ किसका यशोगान करती हैं ?

(ज) विदेशी पर्यटकों के लिए ये मंदिर कैसे हैं ?

(झ) यहाँ के साधव (बनिये) नौकाओं में क्या भर-भर कर लौटते थे ?

(ञ) स्वतन्त्र ओड़िशा प्रदेश कब बना ?

(ट) देश के लिए आधुनिक रक्षा सामग्रियाँ कहाँ बनने लगीं ?

(ठ) लोहे का उत्पादन कहाँ होने लगा ?

भाषा-ज्ञान

1. इन मुहावरों के अर्थ समझिए :

दाँत खट्टे करना

दिल दहलना

जान की बाजी लगाना

धावा बोलना

दिल भर आना

दाने दाने का मोहताज

बीड़ा उठाना

2. ऐसे शब्द बनाइए :

सिंचाई, चढ़ाई, खिंचाई, बड़ाई, कमाई

3. विलोम शब्द लिखिए :

स्थावर	___________	जड़	___________	गुण	___________
सर्दी	___________	खुशी	___________	सुख	___________
अँधेरा	___________	खुशहाली	___________	उत्थान	___________
बढ़िया	___________	वीर	___________	युद्ध	___________
अहिंसा	___________	सजीव	___________	बड़ा	___________

4. पर्यायवाची शब्द जानिये :

आदमी	–	मनुष्य, मानव	मौसम	–	ऋतु
प्राण	–	जान	पन्ना	–	पृष्ठ
युद्ध	–	लड़ाई, जंग	अमूल्य	–	अनमोल, बहुमूल्य
जरिये	–	माध्यम से	द्वीप	–	टापू
प्रांत	–	प्रदेश, राज्य	पेशा	–	धंधा, जीविका, काम
नाव	–	नौका, नैया	किस्मत	–	भाग्य, तकदीर

5. निम्न शब्दों के लिंग बताइए :

संसार, पहाड़, नदी, पौधा, पक्षी, विवेक, दूध, पानी, गर्मी, सर्दी, फसल, अनाज, दु:ख, दर्द, सूखा, अकाल, खुशहाली, चाँदनी, खुशी, नम, अमीरी, गरीबी, जीवन, जिन्दगी, सुहाना, अँधेरी, रात, दिन, मुकाबला, पन्ना, प्राण, जान, दीपक, इतिहास, सामाज्य, आजादी, बिजली, कारखाना, शिक्षा, नाम

6. निम्न शब्दों के वचन बदलिए :

नदियाँ, झरने, पौधे, पन्ने, बड़े, मुकाबला, जान, धारा, हाथी, घोड़ा, मूर्तियाँ, सुई, वस्तु, नाव, जहाज, दाना, बहन, भाई, देशवासी, सुविधा, कंपनी, चुनौती

7. कोष्ठक में से सही क्रियापद चुनकर वाक्यों को पूरा कीजिए :

(क) कलकल करके नदियाँ ——— ।

(बह रहा है, बहती हैं, खड़ी हैं, चलती हैं)

(ख) हंस ने दूध ——— ।

(पिया, पी, पी लिये, पीएगा)

(ग) कलिंगवासियों ने जानें ——— पर जमीन नहीं ——— ।

(दी, दी, दिया, दिये)

(घ) अशोक ने युद्ध छोड़ शांति की नीति ——— ।

(अपनाया, अपनायी, अपनाये, अपनायी)

(ङ) लोगों ने प्राण ——— ।

(दिये, दिया, दी, दीं)

(च) मधुसूदन ने इतिहास ——— ।

(पढ़ा, पढ़े, पढ़ी, पढ़ीं)

(छ) अशोक ने वीरत्व की कहानी ——— ।

(सुना, सुनी, सुनीं, सुने)

(ज) पूर्वजों ने साम्राज्य ——— ।

(बनाया, बनाये)

8. पाठ में से ऐसे वाक्यांश ढूँढ निकालिए :

अच्छी शिक्षा मिली ।

इस्पात कारखाना बसा ।

प्रगति में तेजी आयी ।

9. पाठ में से कुछ क्रिया पदों को छाँटकर उनके तीनों कारणों के रूप लिखिए ।

10. पाठ में से सकर्मक और अकर्मक क्रियाओं को छाँटिए ।

11. इन क्रियाओं के प्रेरणार्थक रूप लिखिए :

डरना, बहना, पढ़ना, बनना, करना, मानना

12. ऐसे शब्द बनाइए :

सुहावना – ______________

गौरवशाली – ______________

तरंगमाला – ______________

जिजीविषा – ______________

◆ ❖ ◆